R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर (आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

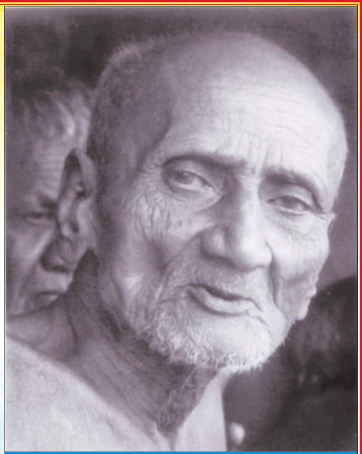

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

क्षमावाणी पर्व विशेषांक
1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक
जैन गज़ट
www.Jaingazette.com
वर्ष 31 अंक 44 कुल पृष्ठ 24 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 01 सितम्बर 2025, वीर नि. संवत् 2550
Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

उत्तम क्षमा धर्म पर सन्देश : उत्तम क्षमा अपनाओ

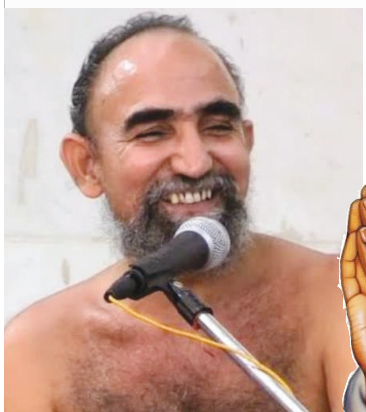

मुनि श्री हितेन्द्र सागर जी महाराज (आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य)

भव्य आत्माओ, क्रोध अच्छे-भले इंसान को भी शैतान बना देता है। क्रोध एक विषधर सर्प है, जिसके डसने से आत्मा वास्तविक स्वरूप को भूल जाती है। क्रोध एक बड़ा पागलपन है। क्रोध अग्नि है, रोग है, राक्षस रूप है, अन्धा है, भयावह है, यमराज तुल्य है, क्रोध शान्ति नहीं, शक्ति का दुरूपयोग है। नरक का द्वारा क्रोध है, दुख का भंडार है, अनर्थों का प्रमुख कारण क्रोध ही है। क्रोध बुद्धि भ्रष्ट कर देता है, निर्दयी बना देता है। मनुष्य क्रोधी होकर पिता को, माता को, पुत्र को, पत्नी को, मित्र को इनमें से किसी को भी मार सकता है। तीव्र क्रोधी तो विष से, शास्त्र से स्वयं का ही घात कर लेता है या ऊंचे मकान से पर्वत आदि से गिरकर, कुएं में, तालाब में कूद कर मर जाता है। क्रोध के प्रभाव से महातपस्वी मुनि भी धर्म से भ्रष्ट होकर नरक गये। एक पल का क्रोध भी व्यक्ति का भविष्य विगाड़ सकता है। क्रोध से मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। क्रोध से हृदय गति तक रूक जाती है। क्रोधी को ब्लड प्रेशर की बीमारी लग जाती है। क्रोध हत्यारा है, क्रोध हिंसक है, क्रोध क्रूर है, क्रोध कठोर है, क्रोध में करूणा नहीं होती, दया नहीं होती। भव्य आत्माओ, एक हरा-भरा गुलशन क्रोध की आग से बीरान हो गया, एक हंसता मुस्कुराता परिवार उजड़ गया इसलिये क्रोध विध्वंस करता है, करूणा विकास है, क्रोध में विनाश है, दया में प्यार है-क्रोध में मार है, क्षमा में कल्याण है-क्रोध में नरक द्वार है, क्षमा में प्रगति है-क्रोध में दुर्गति है। प्रतिशोध, घृणा और क्रोध में पशुता है। आचार्यश्री ने कहा कि क्रोध करना छोड़ दो, क्रोध दुर्गुणों की खान है। पतन का मार्ग है। क्रोध को जीतना है तो सतर्क रहना, विलम्ब करना, स्थान छोड़ देना, क्रोध आते ही मौन धारण कर लें, मौन एक तप है। क्रोध आने पर अपने-अपने मंत्र का स्मरण करना। इस प्रकार क्रोध को जीत कर उत्तम क्षमा धारण करो। उत्तम धर्म पर विचार करो जिससे क्रोध भाग जायेगा। क्षमा आते ही क्रोध भाग जायेगा।

उत्तम क्षमा मनुष्य की शोभा रूप से है, रूप की शोभा गुण से है, गुण की शोभा ज्ञान से है और ज्ञान की शोभा उत्तम क्षमा से है। उत्तम क्षमा - सज्जन संत आत्मा का स्वभाव है। जिस प्रकार जल का स्वभाव शीतलता है। अग्नि का स्वभाव जलाता है, शक्कर का स्वभाव मीठा है, नमक का स्वभाव खारापन है उसी प्रकार आत्मा का स्वभाव क्षमा है। किसी व्यक्ति द्वारा मन-वचन और काय से बिना कारण ही पीड़ा पहुंचाने पर या गाली देने पर अथवा अभद्र व्यवहार करने पर उसके लिए प्रतिकार करने की शक्ति होने पर भी अत्यंत शान्ति एवं समता पूर्वक उस कष्ट को सह लेना और किसी भी प्रकार का प्रतिकार नहीं करना, वह उत्तम क्षमा है। क्षमा वीरों का आभूषण है। क्षमा निर्मल जल के समान है जो कि विरोधी की क्रोध रूपी अग्नि को शान्त कर देती है। उत्तम क्षमा एक ऐसी अद्भुत वस्तु है, जिसे देने वाला और लेने वाला दोनों खुश हो जाते हैं। क्षमाधारी व्यक्ति ही संसार में संकटों पर विजय प्राप्त कर प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति प्राप्त कर सकता है। उत्तम क्षमा से इस लोक और परलोक दोनों सुधरते हैं।

शेष पृष्ठ 10 पर............

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

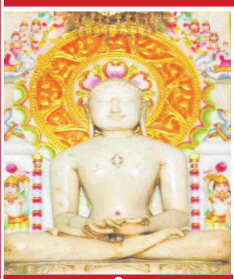

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

7N8D Group Departure
JAPAN
Date: 24 Oct – 31 Oct
Offer price: INR 250,000 pp
Hurry Up!
27 Sep - Group Sold Out
Fly Goldfinch
Your Journey Has Just Begun...
+91 95559 92069
Tokyo | Fuji | Osaka | Kyoto |Nara
International Flight (ex Delhi)
4 Star Accommodation
Bullet Train Experience
Tour Manager & Local Guide
Team Labs & Sogano Rail
All Meals included
www.flygoldfinch.com | +91 81786 38182 | info@flygoldfinch.com

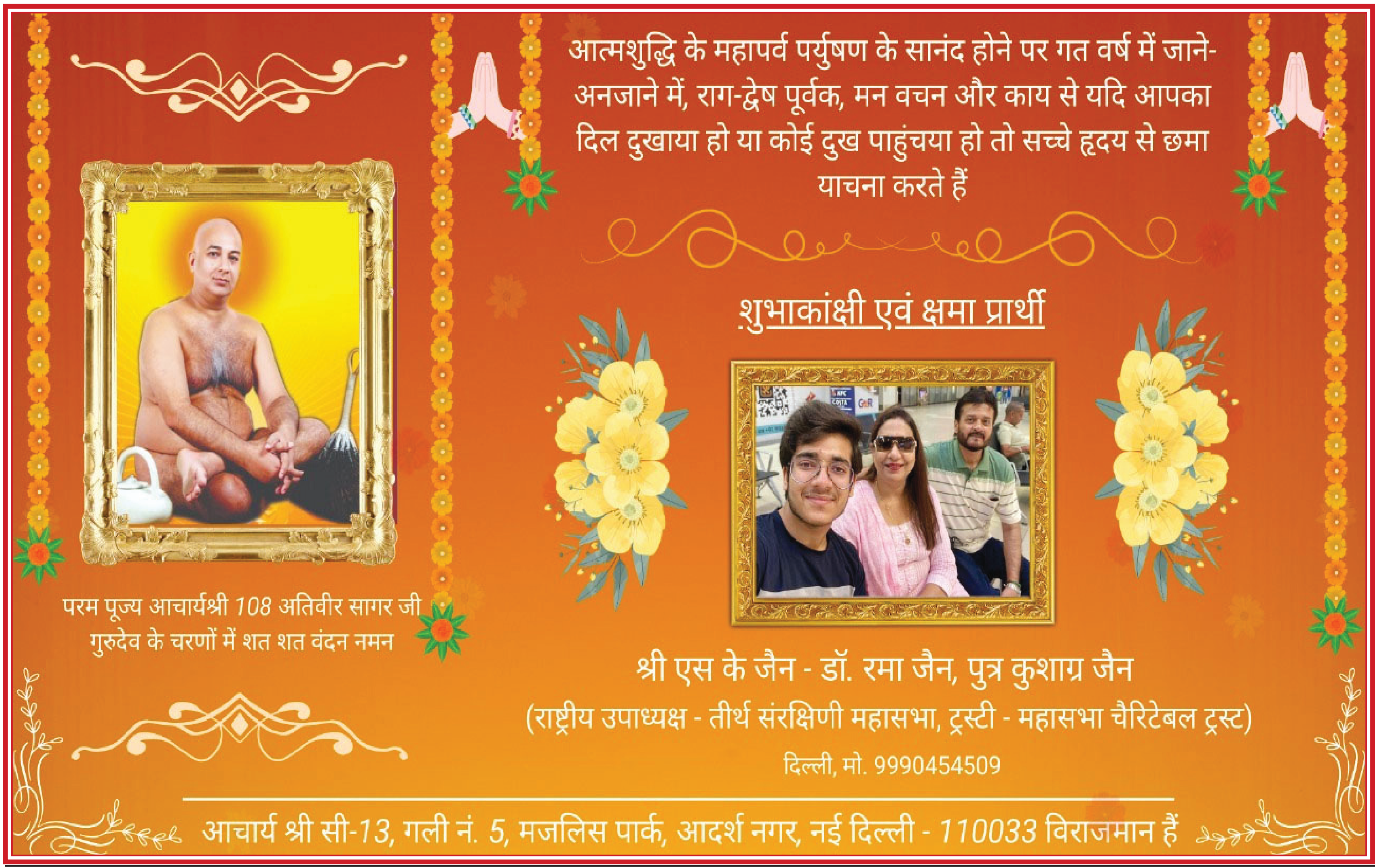
आत्मशुद्धि के महापर्व पर्युषण के सानंद होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो या कोई दुख पाहुंचया हो तो सच्चे हृदय से छमा याचना करते हैं
परम पूज्य आचार्यश्री 108 अतिवीर सागर जी
गुरुदेव के चरणों में शत शत वंदन नमन
शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी
श्री एस के जैन - डॉ. रमा जैन, पुत्र कुशाग्र जैन
(राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - तीर्थ संरक्षिणी महासभा, ट्रस्टी - महासभा चैरिटेबल ट्रस्ट)
दिल्ली, मो. 9990454509
आचार्य श्री सी-13, गली नं. 5, मजलिस पार्क, आदर्श नगर, नई दिल्ली - 110033 विराजमान हैं

विश्व मैत्री पर्व क्षमा वाणी पर
हार्दिक क्षमायाचना के साथ

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

श्री समय सागर महाराज संघ के आचार्य हैं और रहेंगे, हमारे नायक हैं

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज का अतुलनीय उपकार, जीव दया के कार्य अविस्मरणीय - निर्यापक श्रमण श्री सुधा सागर महाराज

विश्व में शांति और समाधान जैन समाज के जियो और जीने दो से ही संभव - केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया

वेदचन्द जैन

गौरेला। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने जगत को जो दिया है वह तीर्थंकर भगवंतों के उपकार के समकक्ष है, वरन् हम शिष्यों पर तो गुरु का उपकार तीर्थंकर भगवंतों के उपकार से भी अधिक है। निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री सुधा सागर महाराज ने गुरू उपकार का उल्लेख करते हुए गृहस्थों से कहा कि गृहस्थ हमारे संघ की आंतरिक स्थिति में हस्तक्षेप करने का प्रयास न करें, हम साधु आपकी गृहस्थी में कोई हस्तक्षेप नहीं करते।

निर्यापक श्रमण श्री सुधा सागर महाराज ने अशोकनगर में कहा कि हमारे गुरू आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आत्मसाधना में लीन होते हुए भी उनकी करुणा जगत के लिए कल्याणकारी थी। उनके हम पर इतने उपकार हैं कि हम सौ जन्मों में भी उनके उपकार से ऋण नहीं हो सकते। कुछ दिन पूर्व एक विवादास्पद जिज्ञासा में हमारे गुरू के संबंध में अनुचित कथन करते हुए कहा गया था कि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने हमें क्या दिया, उन्होंने जो हमें दिया वो तुम क्या जानो, उन्होंने समाज उत्थान, राष्ट्र उत्थान सहित जगत कल्याण का संदेश दिया, उनके निर्देशन में लाखों गायों का संरक्षण, हथकरघा के माध्यम से गरीबों को अहिंसा के साथ आत्मनिर्भर बनाया, आजीविका प्रदान की। हमारे संघ के आचार्य वर्तमान में श्री समय सागर महाराज हैं और रहेंगे, संघ के नायक हैं। मुनि श्री ने कहा कि मैं जो हूं जिस रूप में हूं उसी में पूर्णता की अनुभूति करता हूं।

निर्यापक श्रमण श्री सुधा सागर महाराज के दर्शन के लिए पहुंचे केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि मेरा जन्म जैन समाज में नहीं हुआ ये मेरे वश में नहीं था किंतु मैं कर्म से जैन बनना चाहता हूं। श्री सिंधिया ने कहा कि संसार के भिन्न-भिन्न स्थानों में युद्ध हो रहा है और आज परंपरागत युद्ध के रूप में भी परिवर्तन हो रहा है अब विश्व में आर्थिक युद्ध लड़ा जा रहा है। ऐसे समय में जैन समाज का जियो और जीने दो का सूत्र ही एक मात्र समाधान है। मैं कहीं भी पहुंच जाऊं मगर मैं पूज्य मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज की चरणों की धूल के बराबर भी नहीं हो सकता। अशोकनगर में मुनि श्री का चातुर्मास चंबल ग्वालियर संभाग का सौभाग्य है।

मुनि श्री ने बताया कि राजा का जन्म प्रजा की रक्षा, प्रगति के लिये होता है। राज्य व्यवस्था प्रजा के हित में ही निहित होती है। आपने आचार्य श्री विद्यासागर महाराज पर टिप्पणी करने वाले सागर निवासी संतोष जैन पटना को संदेश देते हुए कहा कि उन्हें इसी मंच से सरल भावों के साथ क्षमायाचना करना चाहिए।

कार्यक्रम में गूंजा संकल्प, आचार्यश्री समयसागर का युग आने वाला है

गुरुभक्त समर्पण सभा: 7 जिलों सहित तहसीलों से आए 2000 गुरुभक्त

सागर। आचार्य श्री विद्यासागर महाराज और आचार्य श्री समयसागर महाराज के विरुद्ध टिप्पणी करने वाले सागर निवासी संतोष पटना के खिलाफ जैन समाज ने प्रचंड विरोध दर्ज कराया। खुरई रोड स्थित गार्डन में आयोजित गुरु भक्त समर्पण कार्यक्रम में संभाग भर से 2000 श्रद्धालु शामिल हुए। सभा में सभी ने एक स्वर से कहा- आचार्यश्री समयसागर महाराज थे, हैं और रहेंगे। उनके विरुद्ध की गई किसी भी गलत टिप्पणी का कड़ा प्रतिकार किया जाएगा। ब्रह्मचारी संजीव ने कहा कि आचार्य कुंदकुंद स्वामी के बाद यदि किसी आचार्य ने जन-जन के लिए सर्वाधिक योगदान दिया है तो वे आचार्य विद्यासागर महाराज हैं। ब्रह्मचारिणी रेखा ने कहा कि जिन्होंने 'पत्रकांड' किया है, उन्हें आचार्यश्री के समक्ष जाकर प्रायश्चित करना चाहिए। यदि सत्य उद्घाटित होता है तो वह किसी भी दंड को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। पीसी नायक ने कहा कि आचार्य विद्यासागर महाराज के दर्शन से प्रत्येक व्यक्ति ने अपने जीवन में

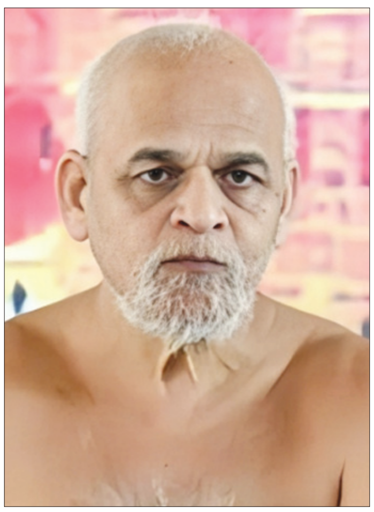

परिवर्तन का अनुभव किया है। सुशील जैन रहली ने समाज में समन्वय की आवश्यकता बताई। कुंडलपुर कमेटी के नवीन निराला ने कहा कि आचार्य विद्यासागर का आशीर्वाद ही है जिससे समाज की सामर्थ बढ़ी है। पटनागंज मंदिर अध्यक्ष राकेश जैन ने स्पष्ट कहा कि आचार्य श्री एक थे, एक हैं और एक ही रहेंगे। राहतगढ़ के संतोष जैन ने साधुओं को संयमित भाषा पर जोर दिया और सुझाव दिया कि श्रेष्ठिजनों की समिति बनाकर घटनाओं पर संज्ञान, मौन साधना और 36 मूल गुणों के पालन को उनकी गंभीरता और शक्ति का प्रतीक बताया। सभा को सुनील देव, कपिल मलैया, महेंद्र भूसा, सुदीप जैन, अशोक पापेट, महेंद्र सोधिया, अवधेश जैन सहित विभिन्न जिलों से आए समाज के वरिष्ठजनों ने भी संबोधित किया। वक्ताओं ने स्पष्ट कहा कि उद्दंडता करने वालों को आचार्य श्री के समक्ष क्षमा याचना करनी चाहिए। संचालन अनिल नैनधरा, प्रियेश जैन और आशीष श्री जी ने किया। समापन पर ब्रह्मचारी संजीव, ब्रह्मचारिणी रेखा सहित समाजसेवियों का सम्मान किया गया। सभा में भोपाल, दमोह, विदिशा, टीकमगढ़, जबलपुर, नरसिंहपुर, कुंडलपुर, बीना, खुरई, बंडा, जैसीनगर, राहतगढ़ और सागर जिले के अन्य स्थानों से समाज के लोग एकजुट हुये।

पावन धर्मस्थल की स्मिता को धूमिल करने के दुष्प्रचार पर अविलम रोक लगे

कर्नाटक सरकार से दोषियों को दण्डित करने की मांग

सकल दक्षिण कर्नाटक समाज हेग्गड़े परिवार की पीढ़ियों से अतुल लोक कल्याण की परंपरा से कई सदियों से बहु परिचित है। इतिहास में दर्ज है जब भी दक्षिण कर्नाटक में अकाल - विपत्ति आयी, हेग्गड़े परिवार ने बहुल अन्न दान कर दरिद्रनारायण को संकट से उबारा है। डॉ. वीरेंद्र हेग्गड़े को न केवल धर्मस्थल बल्कि दूर दूर तक जनसमान्य राजर्षि की तरह पूजते हैं। उन्हें मंजुनाथ स्वामी धर्मस्थल का समर्पित सेवानिष्ठ मंगलकारी धर्माधिकारी मानते हैं। उनकी ग्राम विकास और कल्याण, ग्रामीण स्वावलंबन, जन जन तक शिक्षा, सामाजिक उत्थान और समरसता के लिए राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कारों से निरंतर नवाजा गया है। भारत के राष्ट्रपति ने सन 2000 में पद्मभूषण और सन 2015 में पद्मविभूषण अलंकृत किया। कर्नाटक सरकार ने 2009 में कर्नाटक रत्न घोषित किया। उनकी अन्यान्य सेवाओं के लिए राष्ट्रपति ने उन्हें संसद की राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया है। डॉ. वीरेंद्र हेग्गड़े जी ने धर्मस्थल को अपना कर्मस्थल बनाकर दक्षिण कन्नड़ के विकास में अतुलनीय कीर्तिमान स्थापित किये हैं जो उनके निषपृह कार्यों की व्यापकता और प्रभाव को दर्शाते हैं। कर्नाटक का जन मानस सदा उनका आभारी रहेगा। आज उन्हीं पर कुछ समाज विरोधी तत्व धर्मस्थल पर कब्जा करने के स्वार्थवश सुनियोजित षड्यंत्र कर नितांत निराधार आक्षेप लगा रहे हैं। धर्मस्थल को हड़पने का षड़यंत्र कर्नाटक ही नहीं पूरे देश को कभी स्वीकार्य नहीं होगा। देश की जैन अजैन अन्यान्य संस्थाओं के साथ अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन राष्ट्रीय संस्थाएं धर्मस्थल हेग्गड़े परिवार के साथ खड़ी हैं। पद्मविभूषण डॉ. वीरेंद्र हेग्गड़े जी का वंदन करती हैं और इस संकट की घड़ी में हम सब उनके साथ हैं. सत्यमेव जयते।

-डॉ. विमल जैन, दिल्ली

होनी को बदलने का नहीं स्वीकारने का नाम पुरुषार्थ है

Gangwal Group of Companies

आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गतवर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन, वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो, कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते है।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमाप्रार्थी :-

'गजराज जैन गंगवाल एवं परिवार'

www.cpil.com

CHANDRA PRABHU INTERNATIONAL LIMITED

CPIL- leading Trading house dealing into imported and domestic coal
Expanding business in the fields of Vertical Farming, Conversion of Agro and municipal waste into Bio- energy and Town Planning in new Smart City Projects.

Registered Office
14, Rani Jhansi Road, New Delhi-110055

Corporate Office
522, 5th Floor, Galleria Tower, Gurugram-122009

South West Pinnacle

SOUTH WEST PINNACLE EXPLORATION LIMITED

An ISO 9001:2015 certified organization and one of the fastest growing private sector exploration Services Company in India. South West Pinnacle Exploration Limited (SWPE), a 360-degree Service provider who provides end to end exploration, drilling and allied services. Services include Exploration of Coal & minerals, Unconventional Oil & Gas (CBM, Shale and Geothermal) exploration & Production, Aquifer Mapping, 2D & 3D Seismic Data Acquisition, Mining & Processing, Passive Seismic Tomography and providing all kinds of Geological & Geophysical services etc. Also, SWPE is having a joint venture in Oman through which it is presently imparting mining services there in Oman on long term basis. Besides, SWPE has recently been allocated a coal block in the state of Jharkhand.

SWPE has successfully completed more than 15 years of journey and has completed over 100 projects by now, serving clients both from public and private sector. SWPE so far has done 20 Lakh meters of drilling, 5 Lakh meters of Geophysical Logging, 464 sq.km. of 3D Seismic surveys, 407 LKM of 2D seismic Survey for exploration of Coal, Mineral, Oil and Gas. Also, SWPE has a well-experienced team of dedicated professionals to look after key areas of business and the capability of successful project deliveries.

Vikas Jain Gangwal
Chairman & Managing Director

Piyush Jain Gangwal
Joint Managing Director

South West Pinnacle Exploration Limited
Reg Off: 522, Fifth Floor DLF Galleria Commercial Complex, DLF City Phase IV Gurgaon 122009
Corp Off: Ground Floor, Plot No.15, Sector-44, Gurgaon 122003
(W): www.southwestpinnacle.com
(T): + 91-124 4235400, 4235401

विश्व मैत्री पर्व क्षमा वाणी पर हार्दिक क्षमायाचना के साथ

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

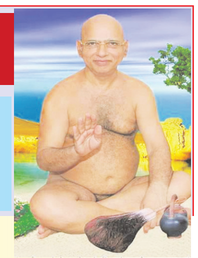

Jain Group

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर व्यक्तित्व- कृत्तित्व राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सफलता पूर्वक हुई संपन्न

आगम साधु के नेत्र हैं: आचार्य श्री वर्धमानसागर, आचार्यश्री बोले समाज को धर्म के लिए संगठित होना बहुत जरूरी है आचार्यश्री ने दिया समन्वय का सूत्र- हम अपनी छोड़ेंगे नहीं और आपकी बिगाड़ेंगे नहीं

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

टोंक। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी वर्ष के अवसर पर बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर व्यक्तित्व-कृत्तित्व राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य व डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर के संयोजकत्व में जैन नसिया, भगवान महावीर मार्ग, टोंक, राजस्थान में दिनांक 23 व 24 अगस्त 2025 को वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमानसागर वर्षायोग समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज टोंक के तत्वावधान में सफलता पूर्वक संपन्न हुई। विद्वत् संगोष्ठी में देश के मूर्धन्य मनीषी विद्वानों ने अपने आलेखों के माध्यम से बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के अवदान को रेखांकित किया।

23 अगस्त को प्रातः 8 बजे से उद्घाटन सत्र पुण्यार्जक परिवार द्वारा ध्वजारोहण व मंगल कलश की स्थापना के साथ शुरू हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत-अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्रि-परिषद ने की। संचालन डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने किया। इस सत्र में प्रोफेसर फूलचन्द्र प्रेमी वाराणसी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन भारती बुरहानपुर, डॉ. अनेकांत जैन दिल्ली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरा सत्र दोपहर में प्रोफेसर फूलचन्द्र प्रेमी वाराणसी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संचालन डॉ. सोनल जैन दिल्ली ने किया। इस सत्र में प्रोफेसर जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार जैन टीकमगढ़, प्रोफेसर नलिन के शास्त्री दिल्ली, प्रोफेसर जयकुमार उपाध्ये दिल्ली, पंडित विनोद कुमार जैन रजवांस, डॉ. आनंद प्रकाश जैन कोलकाता, डॉ. ज्योतिबाबू जैन उदयपुर, डॉ. पंकज जैन इंदौर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। 24 अगस्त को प्रातः तृतीय सत्र प्रोफेसर जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संचालन डॉ. पंकज जैन इंदौर ने किया। इस सत्र में डॉ. शीतलचंद्र जैन जयपुर, डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, ब्र. जयकुमार निशान्त टीकमगढ़, डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दोपहर में चतुर्थ सत्र डॉ. शीतलचंद्र जैन जयपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। संचालन डॉ. आनंद प्रकाश जैन कोलकाता ने किया। इस सत्र में डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, डॉ. आशीष जैन आचार्य सागर, डॉ. सुधीर जैन बारामती, डॉ. आशीष जैन (बम्होरी) दमोह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी आलेखों की पुस्तक का हुआ भव्य विमोचन - इस मौके पर 24 अगस्त को चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी वर्ष के अवसर पर बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर व्यक्तित्व-कृत्तित्व राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत आलेखों की पुस्तिका का भव्य विमोचन संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों द्वारा किया गया। पुस्तक का संपादन डॉ. सुनील संचय, ललितपुर ने किया है। पुस्तक की प्रथम प्रति आचार्यश्री के कर कमलों में भेंट की गई इसके बाद सभी को पुस्तक प्रदान की गई।

23 अगस्त को शाम को आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज के साथ विद्वानों की अंतरंग चर्चा हुई जिसमें अनेक बिंदुओं पर चर्चा हुई। इस अवसर पर वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज ने कहा कि साधु के नेत्र आगम हैं, साधु को आगम अनुसार चलना चाहिए। साधु का लक्षण परिग्रह रहित, कषाय रहित होकर स्वाध्याय प्रेमी होना चाहिए। सभी को समाज को जोड़ना चाहिए, यदि समाज जोड़ नहीं सकते तो तोड़ने का कार्य नहीं होना चाहिए। वर्तमान में समाज को संगठित होना बहुत जरूरी है। सभी को प्रेम, वात्सल्य भाव रखकर समाज को संगठित करना चाहिए। वर्तमान में व्याप्त अनेक विसंगतियों के लिए अपना समन्वय सूत्र बताते हुए कहा कि हम अपनी छोड़ेंगे नहीं और आपकी बिगाड़ेंगे नहीं। यह सूत्र हमने जीवन में 57 वर्षों के संयम जीवन में अपनाया है और शिष्यों को भी यही प्रेरणा देते हैं। उन्होंने विद्वानों से कहा कि अपनी ठेस बचाने के लिए आगम को ठेस नहीं लगना चाहिए।

शेष पृष्ठ 10 पर ....

जैन गजट में वैवाहिक विज्ञापनों का निशुल्क प्रकाशन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा दिगम्बर जैन समाज के केवल अविवाहित युवा एवं युवतियों के वैवाहिक विज्ञापन जैन गजट साप्ताहिक में निशुल्क दिनांक 31/12/2025 तक प्रकाशित करने जा रही है। कृपया इस योजना का लाभ उठाते हुए विज्ञापन प्रकाशन हेतु नीचे दिये गये फार्म को भरकर वाट्सअप पर भेजकर लाभ उठायें- 9415108233, 9415008344, 7505102419। किसी भी व्यक्ति का वैवाहिक विज्ञापन केवल एक बार ही प्रकाशित किया जायेगा। निम्न फार्म की कटिंग पर भेजा हुआ विज्ञापन ही 50 शब्दों तक का प्रकाशित किया जायेगा।

01/09/2025

जैन गजट में वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशन हेतु फार्म

वर/वधु का नाम: ....जन्म तिथि: उम्र........................अविवाहित: हां ( ) नहीं ( )

शहर/जिला: ....प्रदेश..

धर्म/मातृभाषा:........................समुदाय........................कद:....................फुट....................

इंच....................कलर.. सामान्य ( ) मांगलिक ( )

जाति..गोत्र:........................शिक्षा:........................

व्यवसाय/ नौकरी का विवरण..

प्राथमिकताएं/अपेक्षा:..

पिता का नाम:..पिता का व्यवसाय:..

पिता की आय: ....भाई/बहन: ....शहर/राज्य:........................

संपर्क सूत्र/वाटसअप नं.: ....ईमेल आधार कार्ड/आईडी संख्या

(वाट्स अप पर साथ में भेजें)..

पूरा पता (पिन कोड सहित)..

मोबाइल नम्बर..वाटसअप........................ईमेल........................

संपादकीय

साम्वत्सरिक पर्व क्षमावाणी

दशलक्षण महापर्व के तत्काल बाद मनाया जाने वाला क्षमावाणी पर्व एक ऐसा महापर्व है, जिसमें हम वैर-भाव को छोड़ कर एक दूसरे से क्षमा याचना करते हैं, एक दूसरे के प्रति क्षमा भाव धारण करते हैं। इसे क्षमापना भी कहा जाता है और साम्वत्सरिक पर्व भी कहा जाता है।

वस्तुतः यह साम्वत्सरिक पर्व और उसका महत्व गृहस्थों के लिए उसी प्रकार, जिस प्रकार मुनियों के लिए साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण का होता है। प्राचीन काल में दूर-दूर से मुनियों के संघ एकत्र होते थे और किसी एक स्थान पर वे सामूहिक प्रतिक्रमण करते थे। उस दिन प्रत्येक सम्भावित अपराध का उल्लेख कर 'प्रतिक्रमण तस्य करोमि शुद्धं' इत्यादि पाठ बोला जाता था। इन प्रतिक्रमणों का अभिप्राय इतना ही था कि साधु संस्था अपनी बुराइयों के प्रति सदा जागरूक रहे और उनकी शुद्धि के लिए नियत समय पर उसके विरुद्ध अभियान करती रहे।

ठीक यही पद्धति गृहस्थ के लिए भी है। पाप और बुराइयां उसमें भी होती हैं और साधुओं से कई गुणा ज्यादा होती हैं। उनकी शुद्धि के लिए अनेक शास्त्रीय मार्गों का उल्लेख है। गृहस्थ 108 मालाओं के दाने पर जो पंच परमेष्ठी का जप करता है, वह 108 तरीकों से उत्पन्न पापों की निवृत्ति के लिए ही करता है। इसके अतिरिक्त वह सामयिक आदि करता है। उसमें भी आलोचना पाठ, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान आदि का ही आचरण होता है। इस तरह पापों की निवृत्ति के लिए साधु या श्रावक सभी के लिए अपने अपने तरीके शास्त्रों में वर्णित हैं। इन दोषों के अतिरिक्त कुछ ऐसे दोष भी हम करते हैं, जिनका संबंध अपने और पराये दोनों से होता है। वह दोष स्वयं करता है पर उस दोष से दूसरा मनुष्य भी प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए हम क्रोध में आकर दूसरों को गाली देते हैं, झगड़ा करते हैं, मारपीट भी करते हैं। यह दोष हम तो करते ही हैं लेकिन इस दोष का शिकार दूसरा व्यक्ति भी होता है और दूसरा यह दोष उस व्यक्ति के दिल में कांटे की तरह चुभता रहता है। यह चुभन उसमें बदले की भावना पैदा करती है और समय पाकर यह भावना वैर का रूप धारण कर लेती है। अतः ऐसे दोषों की निवृत्ति के लिए सबसे अच्छा उपाय यही है कि हम विनम्र होकर उससे अपने अपराधों की क्षमा याचना करें। अपनी करनी वापस लेकर अपने हृदय की शुद्धि करें और इस व्यक्ति की शल्य चाहे वह बदले की भावना रूप हो या अन्य किसी रूप में हटाने की चेष्टा करें। वर्ष में एक बार आने वाला यह क्षमावाणी पर्व हमें दूसरों के प्रति किये गये अपराधों के लिए क्षमा मांगने का अवसर प्रदान करता है।

वैर भाव तो एक दिन भी रखने की वस्तु नहीं है। प्रथम तो वैर भाव धारण ही नहीं करना चाहिए। यदि कदाचित हो भी जाये तो उसे तत्काल मिटा देना चाहिए। इसके बाद भी यदि रह जाये तो फिर क्षमावाणी के दिन तो मन साफ हो ही जाना चाहिए। यद्यपि क्षमा क्रोध के अभाव का नाम है, तथापि क्षमावाणी का संबंध मात्र क्रोध के अभाव रूप क्षमा से ही नहीं, अपितु क्रोध, मान आदि विकारों के अभाव रूप क्षमा, मार्दव आदि दस धर्मों की आराधना एवं उससे उत्पन्न निर्मलता से है।

क्षमा मांगने में बाधक क्रोध कषाय नहीं, अपितु मान कषाय है। क्रोध कषाय क्षमा करने में बाधक हो सकती है, क्षमा मांगने में नहीं। जब हम कहते हैं -

''खम्मामि सव्व जीवाणं, सव्वे जीवा खमन्तु में।
मित्ति में सव्व भूएसु, वैरं मज्झणं केण वि।।''

अर्थात् सब जीवों को मैं क्षमा करता हूं, सब जीव मुझे क्षमा करें। सब जीवों से मैत्री भाव है, किसी से भी वैर भाव नहीं है।

तब हम ''मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ'', यह कहकर क्रोध के त्याग का संकल्प करते हैं या क्रोध के त्याग की भावना भाते हैं तथा सब जीव मुझे क्षमा करें कहकर मान के त्याग का संकल्प करते हैं या मान के त्याग की भावना भाते हैं। इसी प्रकार सब जीवों से मित्रता रखने की भावना मायाचार के त्याग रूप सरलता प्राप्त करने की भावना है।

आज मानव दूसरों के दुःख से इतना दुःखी नहीं जितना कि दूसरों के सुख से उसे दुख होता है। किसी की कीर्ति सुनकर, सुख सम्पत्ति देखकर मन ही मन जलता रहता है, कुढ़ता रहता है। ऐसा क्यों होता है इस पर जब हम सूक्ष्मता से विचार करें तो पता चलता है कि कई बार बाह्य निमित्त के कारण जाने या अनजाने में भूल हो जाती है। क्योंकि मानव गलती का पुतला है, किन्तु जहां भूल होना या गलती करना प्रथम भूल है वहीं उसे न सुधारना या न स्वीकारना दूसरी भूल है। अतः सदैव अपनी भूल को ठीक करने का, सुधारने का ही लक्ष्य होना चाहिए। देखिए भूल के विषय में कितना सुन्दर वर्णन किया है:

- जो कभी भूल ही न करे उसे भगवान कहते हैं।
- जो भूल से बचता रहे उसे इन्सान कहते हैं।
- जो भूल कर पछताए उसे नादान कहते हैं।
- जो भूलकर मुस्कराए उसे शैतान कहते हैं।
- जो भूल कर भूल जाए उसे बेईमान कहते हैं।
- जो भूलकर फिर भूल न करे उसे सावधान कहते हैं।
- जो भूल से कुछ सीख जाए उसे बुद्धिमान कहते हैं।

भूल की शुद्धि के लिए पश्चाताप या क्षमा याचना करने वाला व्यक्ति बड़ा होता है। वैसे क्षमा करना और क्षमा लेना वस्तुतः दोनों ही कठिन कार्य है। क्षमा भी दो प्रकार की होती है - एक तो दुर्योधन की क्षमा और दूसरी द्रोपदी की क्षमा। मृत्यु शैय्या पर अंतिम श्वासों की बेला में दुर्योधन की क्षमा कैसी थी ? स्वयं के मुख पर बैठी मक्खी को उड़ाने की ताकत नहीं थी. और बोलता क्या था- ''जाओ, मैंने पाण्डवों को, अपने शत्रुओं को माफकर दिया''। केवल उसके मुख तक ही क्षमा शब्द था, अंतर में नहीं। और दूसरी तरफद्रोपदी ? पांच-पांच बेटों के हत्यारे अश्वत्थामा को जब पकड़ा गया, द्रोपदी के सामने उसकी पेशी हुई, उसे मारने को कहा गया, तब द्रोपदी सोचती है कि जिस प्रकार में अपने पुत्रों के वियोग में दुःखी हूं, उसी तरह बल्कि उससे भी ज्यादा इसकी विधवा मां दुःखी होगी। मेरे पुत्र अब पुनः जीवित हो नहीं सकते। वे वापस लौट आने वाले नहीं तो क्यों उस विधवा मां को भी दुःखी किया जाए? अश्वत्थामा बंधन रहित कर दिए गये। यह है शक्ति होने पर भी वास्तव में क्षमा। क्षमा वीरों का भूषण है। दक्षमा कायरता नहीं है। प्रतिशोध की भावना रखें, वही सच्चा क्षमाशील है। आज क्षमावाणी पर्व महज एक औपचारिकता मात्र रह गया है। हम उन्हीं से क्षमा मांगते हैं, जिनके प्रति हमने कोई दोष किया ही नहीं। जिनके प्रति हमने दोष किया है, उनसे हम क्षमा नहीं मांगते हैं, उनसे बैर-भाव बना ही रहता है। आज बाप-बेटे का, भाई भाई का, पड़ोसी पड़ोसी का शत्रु बन गया है। कोई भी किसी के सामने झुकना नहीं चाहता, मान कषाय से सब भरे हुए हैं। अगर ज्यादा जोर देने पर किसी ने क्षमा मांग भी ली तो दुर्योधन वाली क्षमा मांग कर औपचारिकता पूरी कर देते हैं। ऐसी क्षमा से कोई लाभ होने वाला नहीं है। हमें आज इस क्षमावाणी के पवित्र दिन यह संकल्प करना चाहिए कि हम इस महान पर्व को महज औपचारिक नहीं बनाकर वास्तविक बनाएंगे तथा अपने अंतर से क्षमा याचना करके अपने जीवन में सुख-शांति को स्थान देंगे। क्षमापना प्राणी मात्र के हृदय में प्रेम के दर्शन कराने वाली है, जन-जन के हृदय को जोड़ने वाली कड़ी है, शांतिदायक है। ऐसी उत्तम क्षमापना केवल पर्व बनकर ही न रह जाए, हमारे दैनिक जीवन में इसका प्रयोग हो। क्षमापना के उद्देश्य को हम पूर्ण रूप से वरण कर सकें, यही मंगल कामना है।

- कपूर चंद जैन पाटनी,
प्रधान सम्पादक

क्षमा-वाणी पर्वः वैश्विक अशांति के बीच विश्व-मैत्री का पथप्रदर्शक

महावीर दीपचंद ठोले
छत्रपती संभाजीनगर

आज की दुनिया विज्ञान और तकनीक से प्रगति कर रही है, परंतु मानवता अशांति, युद्ध और नफरत की आग में झुलस रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध ने लाखों लोगों को बेघर कर दिया है, मध्य-पूर्व में हिंसा लगातार निर्दोषों का रक्त बहा रही है, आतंकवाद और धार्मिक कट्टरता समाज को तोड़ रहे हैं। ऐसे समय में जैन धर्म का क्षमावाणी पर्व केवल धार्मिक परंपरा न होकर, मानवता को वैश्विक शांति और मैत्री का एक अनमोल संदेश देता है। जैन आगम, आचार्य परंपरा आधुनिक शांति अध्ययन के दृष्टिकोण से यह सिद्ध किया गया है कि क्षमा केवल नैतिक सद्गुण नहीं, बल्कि वैयक्तिक, सामाजिक और कूटनीतिक तीनों स्तरों से कार्य शील एक व्यावहारिक उपकरण है।

इतिहास गवाह है कि अधिकांश युद्ध अहंकार और प्रतिशोध की भावना से जन्मे। देशों का अहंकार सीमाओं पर, समाज का अहंकार जाति-धर्म पर और व्यक्ति का अहंकार अपनी मान-प्रतिष्ठा पर टिका हुआ है।

क्षमावाणी पर्व हमें सिखाता है कि - 'अहंकार त्याग कर ही सच्ची मित्रता का मार्ग प्रशस्त होता है।' आज दुनिया प्रतिशोध की राजनीति पर चल रही है। हमलावर-प्रतिघात की श्रृंखला में निर्दोष जनता पिस रही है। यदि मानवता क्षमा का भाव अपनाए तो प्रतिशोध का यह चक्र रुक सकता है।

जैसे जैन परंपरा में 'मिच्छामि दुक्कडम' कहकर हम सभी से क्षमा माँगते हैं, वैसे ही राष्ट्र और समाज आपसी विरोध के स्थान पर संवाद और क्षमा की परंपरा अपनाएँ तो विश्व में शांति संभव है।

आज धार्मिक आतंकवाद और पंथवाद दुनिया को बाँट रहा है। क्षमा पर्व हमें बताता है कि - 'मत-भेद हो सकते हैं पर मन-भेद नहीं।'

यदि इस पर्व की भावना को विश्व स्तर पर अपनाया जाए तो हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन सभी समुदाय एक-दूसरे को क्षमा कर मैत्री का हाथ बढ़ा सकते हैं। यही वसुधैव कुटुम्बकम् की सच्ची व्याख्या है।

विज्ञान ने हमें परमाणु बम और आधुनिक हथियार दिए हैं, पर मानवीय मूल्य नहीं। क्षमावाणी पर्व बताता है कि विज्ञान और शक्ति तभी सार्थक है जब उसमें क्षमा और करुणा का संतुलन हो। यदि हथियारों पर खर्च होने वाला धन, शिक्षा और स्वास्थ्य पर लगे तो मानवता की पीड़ा मिट सकती है। क्षमा केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि व्यावहारिक कूटनीति है। यदि रूस और यूक्रेन परस्पर क्षमा और संवाद का मार्ग अपनाएँ, तो लाखों लोग सुरक्षित हो सकते हैं। यदि भारत और पाकिस्तान क्षमा की भावना से रिश्ते सुधारें, तो एशिया शांति का केन्द्र बन सकता है। यदि सामुदायिक हिंसा और नफरत की राजनीति करने वाले नेता क्षमा का अभ्यास करें, तो समाज में भाईचारा स्थापित होगा।

'जहाँ क्षमा है, वहाँ प्रतिशोध की ज्वाला शांत हो जाती है, जहाँ मैत्री है, वहाँ युद्ध की दीवारें टूट जाती हैं।'

'नफरत के अँधेरों को मिटाना है अगर, तो क्षमा की मशाल जलानी होगी।'

आज मानवता जिस मोड़ पर खड़ी है, वहाँ केवल परमाणु शक्ति, धन और राजनीति समस्याओं का हल नहीं दे सकते। आवश्यकता है - आध्यात्मिक शक्ति की, जो क्षमा वाणी पर्व के रूप में हमारे पास उपलब्ध है। यदि हर व्यक्ति, हर समाज और हर राष्ट्र क्षमा माँगने और क्षमा देने की परंपरा अपनाए तो विश्व में मैत्री, शांति और करुणा का नया अध्याय लिखा जाएगा। पंथ, राष्ट्र की दीवारें छोटी हो जाएंगी और विश्व मैत्री का युग प्रारंभ होगा। यही है - क्षमा-वाणी पर्व का वैश्विक संदेश।

क्षमा से जागृत होता है प्रेम भाव

- डॉ. नरेंद्र जैन भारती, सनावद

व्यक्ति को यदि अपने जीवन को सुखी रखना है तो उसे विचारों में बदलाव करते हुए सभी जीवों के प्रति सद्भाव रखते हुए सभी को सकारात्मक रूख अपनाना होगा। 'जियो और जीने दो' की भावना को हम तभी साकार रूप प्रदान कर सकते हैं, जब बैर भाव और बदला लेने का विचार हमारे अंर्तमन से समाप्त हो। मैं जाने-अनजाने में हुई सभी गलतियों के लिए क्षमा माँगता हूँ, सभी व्यक्ति या प्राणी मुझे क्षमा करें। मैं सभी को क्षमा प्रदान करता हूँ। जब तरह के विचार किसी के मन में चलते हैं तब वह धर्म के अत्यंत निकट रहता है क्योंकि क्षमा वीरोचित कार्य है। कायर किसी को क्षमा नहीं कर सकते, इसलिए कहा गया है क्षमा वीर रस से भोसादम अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण है।

क्षमा करने से व्यक्ति की वैर की गाँठ खुल जाती है। अनंतानुबंधी कषाय समाप्त होती है तथा व्यक्ति व्यर्थ के तनाव से बचता है। क्षमा का मतलब है पुराने बैर-विरोध को समाप्त करना और धैर्य के साथ नवीन जीवन यात्रा का आरम्भ करना। बैर भाव को समाप्त कर प्रेम, सहानुभूति और सद्भावना से आगे बढ़ना। अंतर्मन को निर्मल बनाएं रखना तथा पुराने घावों पर मल्हम लगाना। अनावश्यक किसी व्यक्ति को दुःखी करने से बचाना तथा अशुभ कर्मों से दूर रहकर शुभ भाव रखना। यह तभी संभव है जब हम अपने मन के विचारों को पवित्र तथा निर्मल रखें और सभी जीवों के प्रति मित्रता का भाव रखें।

क्षमा का भाव क्रोध को समाप्त करता है। क्षमा एक ऐसा कार्य है जो नेक नियत में सर्वोच्च माना जाता है। क्षमा हमें यह संदेश देती है कि क्षमा एक ऐसी आत्मिक शक्ति है जो हमें बताती है कि हम प्रेम करने में सक्षम है तथा सद्भावना के साथ रह सकते हैं। जो हमें आपस में बांटने जा रहे हैं, उन्हें हम अपनी विचार शक्ति से हतोत्साहित कर सकते हैं। एक नवीन ऊर्जा शक्ति को लाकर अनेक विपरीत परिस्थितियों को सामना करने की क्षमता का विकास कर आत्मोथन की ओर बढ़ सकते हैं। जीवन में भटकाव रूप विचारों का त्याग कर यथार्थ मार्ग पर चल सकते हैं। कहा गया है -

क्षमा अहिंसा की जननी है,
विश्व प्रेम का है आधार।
क्षमा धर्म से निर्मित होगा,
अपना एक विश्व परिवार।

क्षमा धर्म में अनेक गुण हैं। क्षमा अहिंसा की जननी है क्योंकि क्षमा धारण किए बिना हम हिंसा के विचार को छोड़ नहीं सकते। जहां हिंसा है वहां संसार में स्नेह भाव जागृत नहीं रह सकता है। क्षमा के बिना हम संपूर्ण विश्व के लोगों को एक परिवार के समान नहीं मान सकते। यदि अहिंसा का पालन कर धर्म मार्ग पर चलना है तो क्रोध को त्याग कर, क्षमा धारण कर और मर्यादित आचरण का हमेशा के लिए त्याग कर सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर आगे बढ़ना होगा। इसी में सुख - शांति निहित है।

काश, भावों को मापने का भी कोई बैरोमीटर होता?

चिरंजी लाल बगड़ा
कोलकाता

➲ यह तो निर्विवाद तथ्य है कि सवस्त्र मुक्ति नहीं मिलती, परंतु यह भी इतना ही सत्य है कि मात्र वस्त्र त्याग से भी मुक्ति नहीं मिलती। आजकल समाज में मुनि, उपाध्याय और आचार्य बनने की और बनाने की होड़ सी मची हुई है। वर्तमान में शताधिक आचार्य मौजूद है, पांच सौ से अधिक दिगंबर मुनि हैं, परंतु आगम की परिभाषा के अनुसार पंच परम पद में स्थित तीन पदानुरूप परमेष्ठि के रूप में, क्या हम उन्हें पाते हैं, विचारणीय है..?

➲ बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य, श्रमण परंपरा के पुनरोद्धारक, आचार्य श्री शांति सागर जी महामुनिराज का जब हम संस्मरण पढ़ते हैं, तो उसमें पाते है का इतनी उत्कृष्ट आगमोक्त चर्या के धारी, महान तपस्वी, उपसर्ग विजेता साधु भी कहते हैं कि मैं अपने को धन्य समझूँगा, यदि मेरा नंबर तीन कम नौ करोड़ मुनियों में अंतिम मुनि के रूप में शामिल हो जाता है।

➲ मुनि पद, न सिर्फ भेष का नाम है और न मात्र बाहरी चर्या का स यह तो, संसार-शरीर-भोग से वैराग्य के बाद, मात्र आत्म रमण के भावों के पुरुषार्थ की साधना का नाम है, जहाँ संसार-शरीर की समस्त क्रियाएँ, मात्र आत्म-तत्व पर केंद्रित हो जाती हैं। अनुकूलता-प्रतिकूलता, शत्रु-मित्र, सब में समता भाव आ जाते हैं। न किसी से राग, न किसी से द्वेष। वीतराग-निर्ग्रंथ स्वरूप का नाम, श्रमण है। समस्त बाह्य क्रियाएँ, भावों को विशुद्ध करने हेतु साधन मात्र हैं। मुख्यता सिर्फ भावों की है, दृष्टि बदलने की है, मार्ग बदलने की है।

➲ वस्त्र त्याग कर शरीर से निर्वस्त्र हो गए, छः बाह्य क्रियाओं का निर्दोष पालन कर लिया, परंतु प्रथम पांच महाव्रत जीवन में निर्दोष घटित नहीं हुए, दस धर्म का स्वरूप प्रकट नहीं हुआ, दिन भर आरंभ परिग्रह में लगे रहे, भले ही वह धार्मिक हो, परमार्थिक हो, पर-हित के लिए हो, परंतु स्व का तो घात ही होता है। मुनि उसके लिए नहीं बना जाता, मुनि तो स्व-कल्याण के लिए ही बना जाता है। पर-कल्याण तो फूल की खुशबू की तरह, स्वतः ही, दूसरे की भवितव्यता के अनुसार हो जाता है। भावपूर्वक नहीं किया जाता।

➲ मुनि या साधु, स्वभाव परिवर्तन एवं स्व के विसर्जन का नाम है। इसमें पर्याय बुद्धि को तिरोहित करना पड़ता है।

➲ भगवान महावीर ने 'जियो और जीने दो' के मूल मंत्र के साथ जागृति, विवेक, जतना, संयम और त्याग जैसे सिद्धांतों पर आधारित पाँच व्रतों को जीवन जीने की कला बताई। ये पाँच व्रत हैं - अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

➲ अहिंसा का तात्पर्य है अनावश्यक हिंसा से पूर्ण परहेज और अपरिग्रह का अर्थ है किसी भी वस्तु पर अधिकार और मोह न रखना। प्रश्न उठता है, क्या आज इन महाव्रतों का पालन, विवेक और जागरूकता से साधु समाज द्वारा हो रहा है ?

➲ आज मुनिजन अहिंसा का पालन करते हुए पैदल विहार तो करते हैं, किन्तु उनके साथ चलने वाले काफिलों में डीजल, पेट्रोल और बैटरी चालित वाहनों की कतारें होती हैं। नगर प्रवेश पर पुष्प वृष्टि, साथ ही उनके कार्यक्रमों में प्रशासनिक तामझाम, जगमगाता मंच, भीड़ और भव्यता के नाम पर अनगिनत जीवों की विराधना होती है।

➲ संतों का कथित अपरिग्रह, सुई तक रखने का त्याग और दूसरी ओर भव्यातिभव्य आयोजनों की चमक-धमक, बोलियों का शोर, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, संस्थाओं का प्रदर्शन, नाच कूद, डीजे, क्या यह सब परिग्रह का भौंडा प्रदर्शन नहीं है ..?

➲ आचार्य कुंदकुंद ने पाहुड ग्रंथ में स्पष्ट लिखा है कि इस हुंडावसर्पिणी काल में करोड़ों मुनि पदधारी होकर भी नरक निगोद जायेंगे और साथ ही उनके करोड़ों भक्तजन भी नरक के पात्र बनेंगे।

➲ आज के युवाओं की निगाहें इन विरोधाभासों को तीव्रता से पकड़ती है। धर्म, उनके लिए केवल मनोरंजन स्थल बनते जा रहे हैं और आत्मिक शांति की खोज कहीं और जगह खोजी जा रही है। क्या यह चिंता का विषय नहीं होना चाहिए ?

➲ अब समय आ गया है कि संत समाज एवं श्रावक समाज आत्म -मंथन करें।

➲ कथनी और करनी के इस अंतर को समाप्त कर, दोनों में सामंजस्य स्थापित करें। केवल तर्क नहीं, बल्कि यथार्थ और पारदर्शिता का मार्ग अपनाएं। धार्मिक स्थलों को आत्मा के जागरण का केंद्र बनाए, न कि प्रदर्शन का मंच।

➲ संतों को प्रतीक नहीं, प्रेरणा बनना होगा जो सरल जीवन और गहन विचारों का प्रतिनिधित्व करें। धर्म केवल कहने की वस्तु नहीं, जीने का आचरण हो - यही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। जिस दिन कथनी और करनी एक हो जाएंगी, उसी दिन से धर्म का वास्तविक प्रभाव जनमानस पर पड़ेगा।

➲ दीपक बोलता नहीं, प्रकाश ही उसका परिचय होता है, वैसे ही साधु की पहचान उसके साधु स्वभाव से ही झलकनी चाहिए। आजकल के कुछ साधु तो सीधे सीधे मठाधीश जैसे समाज को आदेश देते हुए दिखाई देते हैं, जो कि कतई आगम सम्मत नहीं है।

➲ एक दिगंबर आचार्य बलात्कार के मामले में सलाखों के पीछे सजा भुगत रहा है, दूसरा दिगंबर साधु सोशल मीडिया में तलवार लहराते और पिस्टल साधते दिखाई देते हैं, एक वरिष्ठ साधु हजारों करोड़ बेनामी संपत्ति के अधिकारी है, क्या ऐसे साधु भी पंचम गुणस्थान वाले ही माने जायेंगे ?

➲ प्रश्न तो दिमाग में अनेक हैं, परंतु उत्तर देगा कौन? यहाँ तो पिच्छि मात्र को देख कर नमन करने की बात ही बताई जाती है। जरूरत इस कटु यथार्थ से रूबरू होने की है, श्रद्धा के नाम पर चुप रहने की नहीं।

➲ अगर आधुनिक तार्किक युवाओं तक धर्म पहुंचाना है, तो कुछ तो सोचना पड़ेगा। सामने भले ही कोई कुछ ना कहें, परंतु देख कर समझ सब रहे हैं।

➲ कर्म सिद्धांत के अनुसार कर्म आपके धर्म/संप्रदाय को नहीं देखता, भेष को नहीं देखता, हिंदू मुसलमान या जैन में भेद नहीं करता, वह तो आपकी मनः स्थिति, भावों को देखता है, परखता है, उसी अनुरूप कर्मों का आश्रव और बंध होता रहता है। काश, भावों को मापने का भी कोई बैरोमीटर होता। अग्रिम क्षमा भाव के साथ, सबसे क्षमा सबको क्षमा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

VIJAY KUMAR GANGWAL
CROWN Enterprises Pvt. Ltd.
GUWAHATI-781001
Phone : 2517274, Mobile : 98640-20611
e-mail : distribution@crownenterprisesprivatelimited.com

दुश्मन को जो सबसे अच्छा उपहार हम दे सकते हैं वो है क्षमा

डॉ. निर्मल जैन
(से.नि.) न्यायाधीश

जिंदगी भर लोग हमें गुस्सा दिलाएँगे, अनादर करेंगे और बुरा व्यवहार करेंगे। वे जो कुछ भी करते हैं, उसका बदला समय पर छोड़ दिया जाए, हम सोचेंगे तो हमारे दिल की नफरत हमें ही निगल जायेगी। नुकसान और नफे के बाजार अलग-अलग नहीं होते हैं। जहां नफ होता है वहीं नुकसान की संभावना होती है। उसी प्रकार जो अवसर क्रोध के होते हैं वही अवसर क्षमा के होते हैं। सामने वाले के जिस व्यवहार और स्वभाव पर हमें क्रोध आता है वैसे ही व्यवहार और स्वभाव पर क्षमा की भी जरूरत होती है। जरा-जरा सी बातों में मान-सम्मान आड़े आकर हमारे अहं-भाव की पुष्टि करता रहता है। इसी अहं से भ्रमित हो हम गलतियाँ और गलत फहमियों में उलझकर आपसी संबंधों में कटुता उत्पन्न कर लेते हैं। विकारी भाव घुसपैठ कर हमारे मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य को असंतुलित कर देते हैं। एक शोध के अनुसार लम्बे समय तक मन में बदले की भावना, ईर्ष्या, जलन और दूसरों के अहित का चिन्तन और प्रयास करने पर मनुष्य भावनात्मक रूप से बीमार होकर अपने मूल स्वभाव को छोड़ पतन के रास्ते पर चल पड़ता है। क्षमा करने और क्षमा किये जाने का अवर्णनीय आनंद एक ऐसा परमानंद है जो देवताओं में भी ईर्ष्या जगा सकता है।

भगवान भले ही हमारे पाप को क्षमा कर दें किंतु स्नायु संस्थान हमारे किसी भी क्रोध, आवेश, उद्वेग के लिए क्षमा नहीं करता - विलियम जेम्स तलवार की धार तीखी होती है पर क्रोध की धार उससे भी अधिक तीक्ष्ण है। सर्प का दंश प्राण लेवा होता है पर क्रोध का दंश उसे भी तीव्रता से मारक होता है। इन सबसे ऊपर क्रोध की ज्वाला ऐसी होती है जो दूसरों को तो जलाती ही है उसे भी जलाती है जो उसको आश्रय देता है। क्रोध का उन्माद पागल बनाकर विवेक समाप्त कर देता है, शक्ति क्षीण कर देता है। ऐसे विनाशक क्रोध से मुक्ति पाने का पहला सोपान है-क्षमा। समस्त विश्व में हिंसा और आतंक का तांडव हो रहा है। ऐसे में सहिष्णु होना अर्थात क्षमाशील होना ही एक मात्र समाधान है। हिंसा और आतंक के बारूद पर बैठे विश्व को बचाने महावीर, राम, कृष्ण के पुनर्जन्म की नहीं, बल्कि उनके द्वारा जिये गए मूल्यों के पुनर्जन्म की अपेक्षा है। जरूरत है हम बदलें, हमारा स्वभाव बदलें और हर क्षण अहिंसा प्रवर्तक महावीर बनने की तैयारी में जुटें। महावीर बनने की कसौटी है - देश और काल से निरपेक्ष, जाति और संप्रदाय की कारा से मुक्त चेतना का आविर्भाव। गलतियों के लिए हृदय से क्षमा मांगना अहिंसा का आधार है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं - क्षमा वीरों का काम है। अपने दुश्मन को जो सबसे अच्छा उपहार जो हम दे सकते हैं वो है क्षमा। किसी एक अपराध की सजा बार-बार नहीं दी जा सकती। क्षमा न करके मन में आक्रोश और बदले की भावना रखे रहना खुद अपने को और भूल करने वाले को जीवन पर्यंत दंडित करना ही तो है। मन की शांति और प्रसन्नता बनाये रखने के लिए और संबंध मधुर बने रहें, तन-मन स्वस्थ रहे इसका एक ही समाधान है कि हम शुद्ध अंतःकरण से अपने सभी अपकृत्यों की क्षमा मांगने के साथ समस्त जीवों के प्रति वात्सल्य-भाव रखते हुए उन्हें भी बिना किसी अगर-मगर के क्षमा कर जीवन को सरलता के आयाम दें। क्षमा हमारे अंतःकरण में दया और मानवता की ज्योति आलोकित कर सज्जनता और सौम्यता के रास्ते पर ले जाकर मनमुटाव, दुश्मनी एवं आपसी टकराहटों, प्रतिशोध की भावना, घृणा-द्वेष को मिटते हुए जीवन में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, प्यार, आत्मीयता की धारा प्रवाहित कर देती हैं। प्रकट में तो हम दूसरे को क्षमा कर रहे होते हैं पर वास्तव में क्षमा की समस्त प्रतिक्रियाएं हम पर ही अधिक लागू होती हैं। क्षमा मांगी नहीं जाती अर्जित करनी पड़ती है। जैसे-जैसे हम इस क्षमाशीलता के मार्ग पर अग्रसर होते हैं इसके सुपरिणामों से अभूतपूर्व सुखानुभूति के साथ तनाव-मुक्त जीवन जीने लगते हैं। क्षमा, नफरत का निदान है, पवित्रता का प्रवाह है, नैतिकता का निर्वाह है। क्षमा, सद्गुण का संवाद है, अहिंसा का अनुवाद है। क्षमा, दिलेरी के दीपक में दया की ज्योति है। हमारे मन में विकारों का प्रवेश ना हो सके इसलिए सिर्फएक दिन के लिए ही नहीं अपितु क्षमा-भाव के दीपक को जीवन पर्यंत कभी बुझने न देना है। चाहे कितनी भी बार दांत जीभ को काटें वे तब भी दोनों साथ रहते हैं और साथ काम करते हैं। यही क्षमा और परस्पर संबंधों में अंतर्निहित भावना है।

आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

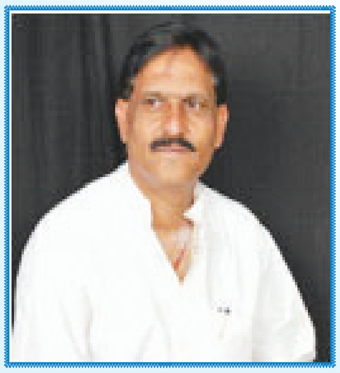

Pramod jain
Rashtriya Upadhayaksh & Trusty-
Bharat Varshiya Dig. Jain Mahasabha C. Trust
21/359, Dharmpura, Near Shantinath Jain Mandir,
Canal Road, Baraut,
Baghpat (U. P.)
Mob. 8077577336

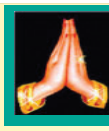

आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Mahesh Jain Sethi
C-82 jawahar Colony
Kampoo Lashakar Gwalior
(M.P.) 474001
Mob. 9884191722

क्षमा वाणी पर्व : आत्मशुद्धि और मानवीय रिश्तों का महापर्व

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

मानव जीवन की सबसे पवित्र भावना है क्षमा। क्षमा केवल एक शब्द नहीं, बल्कि वह जीवन-दर्शन है जो व्यक्ति को आत्मिक शांति और समाज को स्थायी सौहार्द प्रदान करता है। जैन धर्म में क्षमा वाणी पर्व इस भाव का महापर्व है। यह पर्व वर्षभर की कटुता, द्वेष और गलतियों को समाप्त कर जीवन में नई शुरुआत करने का अवसर देता है।

जैन समाज में इस दिन सभी अनुयायी एक-दूसरे से कहते हैं -

'मिच्छामि दुक्कडम' - अर्थात यदि मैंने आपसे मन, वचन या शरीर से कोई गलती की हो तो मुझे क्षमा करें। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि सच्चा बल हथियारों में नहीं, बल्कि क्षमा में है। जैसा कि आचार्य कुंदकुंद ने कहा है -

'सकलेषु पणेयेसु खमेया सुहदोवरे।
संसारदव्वभूताणं खमा जीवोहि जीविणं।।'

(अर्थात - जीव को सभी प्राणियों के प्रति क्षमा का भाव रखना चाहिए, क्योंकि क्षमा ही जीवन की श्रेष्ठता है।)

1. क्षमा वाणी पर्व का महत्व - क्षमा वाणी पर्व केवल जैन अनुयायियों तक सीमित नहीं, बल्कि यह संपूर्ण मानवता का पर्व है। इस दिन व्यक्ति अपने भीतर झांककर सोचता है कि उसने किन-किन को दुःख पहुँचाया है। जब हम क्षमा मांगते हैं तो अहंकार का बोझ हल्का होता है और आत्मा शुद्ध होती है। आचार्य तुलसी का कथन है -

'क्षमा से बड़ा कोई धर्म नहीं। क्षमा को अपनाना आत्मा को देवत्व की ओर ले जाना है।'क्षमावाणी पर्व इसी आत्मिक उत्थान का स्मरण है।

2. क्षमा का दार्शनिक आधार - जैन दर्शन के अनुसार हर जीव अपने कर्मों का बंधन स्वयं करता है। क्रोध, मान, माया और लोभ - ये चार कषाय आत्मा को बाँधते हैं। इनमें से क्रोध सबसे प्रबल है और उसका समाधान है क्षमा।

आचार्य अमृतचंद्र ने पुरुषार्थसिद्धि उपाय में लिखा है -

'**अपराधिनः** प्रति कोपं न कुर्यात, क्षमा धर्मस्य भूषणम् ।'

(अर्थात अपराधी के प्रति भी कोप न करें, क्योंकि क्षमा धर्म का आभूषण है।) इसलिए क्षमा केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि आत्मा को बंधन से मुक्त करने का उपाय है।

3. क्षमा और अहिंसा का संबंध - जैन धर्म का मूल है अहिंसा, परंतु अहिंसा का सही स्वरूप तभी प्रकट होता है, जब उसमें क्षमा का भाव जुड़ा हो। यदि कोई हमें अपमानित करे और हम प्रतिशोध न लेकर क्षमा कर दें, तभी अहिंसा साकार होती है।

आचार्य विद्यासागर जी कहते हैं -

'अहिंसा केवल बाहर से प्राणी को न मारना नहीं है, बल्कि भीतर के क्रोध को भी क्षमा में बदल देना है।'

इस प्रकार क्षमा, अहिंसा का प्राण है।

4. क्षमा का सामाजिक महत्व - आज समाज में पारिवारिक विवाद, आपसी कलह, जातीय संघर्ष और राजनीतिक कटुता ने रिश्तों को कमजोर कर दिया है। यदि हम क्षमा वाणी पर्व की भावना अपनाएँ तो परिवार में सामंजस्य स्थापित होगा। समाज में भाईचारा बढ़ेगा। व्यापार और राजनीति में पारदर्शिता आएगी। राष्ट्र में शांति और सहयोग का वातावरण बनेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा था - 'क्षमा केवल व्यक्तिगत संबंधों तक सीमित नहीं, बल्कि यह सामाजिक एकता का सूत्र है।'

5. जैन आगम और क्षमा - जैन आगमों में क्षमा का विस्तृत वर्णन मिलता है। उत्तराध्ययन सूत्र कहता है -

'सव्वे जीवा परस्परा, परस्परं खमंति।'

(अर्थात सभी जीव एक-दूसरे को क्षमा करें।)

तत्त्वार्थ सूत्र (10.21) में कहा गया है -

'क्षमा धर्मः परमं बलम।' (अर्थात क्षमा ही सर्वोच्च बल है)

ये सूत्र बताते हैं कि क्षमा जैन दर्शन का आधार स्तंभ है।

6. क्षमा वाणी पर्व का पालन - जैन समाज में यह पर्व अत्यंत श्रद्धा और भाव से मनाया जाता है। लोग व्यक्तिगत रूप से मिलकर, पत्र लिखकर या आज के समय में मोबाइल और सोशल मीडिया के माध्यम से क्षमा मांगते हैं। जैन मुनि साधु अपने प्रवचन में क्षमा के महत्व को समझाते हैं। समाज में सामूहिक 'क्षमा याचना सभा' आयोजित होती है।

इस प्रकार यह पर्व आधुनिकता के बीच भी अपनी पवित्रता बनाए हुए है।

7. क्षमा की मनोवैज्ञानिक शक्ति- मनोवैज्ञानिक दृष्टि से क्षमा का महत्व असाधारण है। क्षमा तनाव और चिंता को दूर करती है। यह मन को शांत और स्थिर करती है। क्षमा करने वाला व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष से मुक्त होकर सुखी जीवन जीता है। अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक रॉबर्ट एनराइट ने भी शोध द्वारा सिद्ध किया है कि 'क्षमा करने वाले लोग शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ रहते हैं।'

8. क्षमा और आधुनिक जीवन - आज की दुनिया में अहंकार, ईगो और स्वार्थ रिश्तों को तोड़ रहे हैं। छोटी-सी बात पर लोग सालों तक बातचीत बंद कर देते हैं। कोर्ट-कचहरी तक विवाद खिंच जाते हैं। क्षमावाणी पर्व हमें याद दिलाता है कि ''रिश्ते जीतने के लिए क्षमा करना जरूरी है, विवाद जीतने से अधिक महत्व रिश्तों का है।''

9. इतिहास और क्षमा के प्रेरक उदाहरण - भगवान महावीर ने चांडकौशिक नाग को क्षमा कर दिया, जिसने उन्हें डसा था। सम्भूतविजय गणधर का अपमान होने पर भी उन्होंने प्रतिशोध नहीं लिया। आचार्य विद्यासागर जी का जीवन भी इसका उदाहरण है, अनेक बार आलोचना और कठिनाई के बावजूद वे केवल मुस्कुराकर क्षमा का भाव प्रकट करते हैं।

ये उदाहरण हमें बताते हैं कि क्षमा ही सच्चा पराक्रम है।

10. क्षमा वाणी पर्व और आत्ममंथन - क्षमा वाणी पर्व केवल दूसरों से क्षमा मांगने का नहीं, बल्कि अपने भीतर झांकने का भी पर्व है। हमें सोचना चाहिए -

- क्या मैंने किसी को दुख दिया?
- क्या मेरे वचनों से किसी का दिल टूटा ?
- क्या मैंने ईर्ष्या, द्वेष या क्रोध से किसी को आहत किया?

आचार्य तुलसी ने कहा है - 'आत्ममंथन बिना क्षमा अधूरी है।'

11. क्षमा से जुड़ी प्रेरणादायी कथाएं - एक व्यापारी और उसके भाई में वर्षों से विवाद था। क्षमा वाणी पर्व पर उसने पहल की और कहा - 'मिच्छामि दुक्कडम।' उसका भाई भावुक हो गया और वर्षों पुराना विवाद समाप्त हो गया। यह घटना बताती है कि क्षमा रिश्तों को पुनर्जीवित कर सकती है।

12. क्षमा का वैश्विक महत्व - आज दुनिया में युद्ध, आतंकवाद और नफ़रत का माहौल है। यदि राष्ट्र भी क्षमा का भाव अपनाएँ, तो शांति और सहयोग स्थापित हो सकता है।

महात्मा गांधी ने कहा था - "Weak can never forgive. Forgiveness is the attribute of the strong."(कमजोर कभी क्षमा नहीं कर सकते, क्षमा तो बलवान का आभूषण है।) यह कथन जैन धर्म की शिक्षाओं से मेल खाता है।

13. नई पीढ़ी के लिए संदेश - युवा पीढ़ी को यह पर्व विशेष रूप से अपनाना चाहिए। आज सोशल मीडिया पर लोग छोटी बात पर एक-दूसरे को ब्लॉक कर देते हैं। लेकिन क्षमा वाणी पर्व हमें सिखाता है कि 'रिश्ते तोड़ना आसान है, पर उन्हें जोड़ना ही सच्चा साहस है।'

14. निष्कर्ष - क्षमा वाणी पर्व जीवन का सबसे पवित्र उत्सव है। यह पर्व हमें सिखाता है कि -

- क्षमा ही सच्चा पराक्रम है।
- क्षमा से ही आत्मा शुद्ध होती है।
- क्षमा से ही समाज में प्रेम और शांति स्थापित होती है।

आचार्य विद्यासागर जी के शब्दों में - 'क्षमा केवल पर्व नहीं, बल्कि जीवन का स्थायी भाव होना चाहिए।' इसलिए आओ, इस पर्व पर हम सब अपने मन से कटुता और द्वेष मिटाएं, रिश्तों को पुनः जीवित करें और सच्चे हृदय से कहें - 'मिच्छामि दुक्कडम।'

'क्षमा वीरस्य भूषणं'
आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

अशोक जैन
चूड़ीवाल
बरपेटा रोड
(आसाम)
मो. 9435124862

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
सितम्बर 2025 कल्याणक
दिनांक एवं तिथि

06 सितम्बर 2025
भाद्रपद शुक्ल पक्ष चतुर्दशी
श्री वासुपूज्य भगवान
मोक्ष कल्याणक

09 सितम्बर 2025
आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया
श्री नमिनाथ भगवान
गर्भ कल्याणक

22 सितम्बर 2025
आश्विन शुक्ल पक्ष एकम
श्री नेमिनाथ भगवान
ज्ञान कल्याणक

30 सितम्बर 2025
आश्विन शुक्ल पक्ष अष्टमी
श्री शीतलनाथ भगवान
मोक्ष कल्याणक

समाज की। समाज द्वारा। समाज के लिए
djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha digjainmahasabha.org

बागीदौरा में मुनि विनम्र सागर महाराज से राजस्थान सरकार के विभिन्न अधिकारियों एवं समाजसेवियों ने लिया मंगलमय आशीर्वाद

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

25 अगस्त। बागीदौरा कस्बे में दिगम्बर जैन मंदिर में राजस्थान सरकार के विभिन्न अधिकारियों ने एवं समाजसेवियों ने मुनि विनम्र सागर जी महाराज से मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त कर अपने को धन्य किया। कार्यक्रम में सभी अधिकारियों ने विशाल गौशाला का अवलोकन भी किया। दिगंबर जैन समाज के विनोद दोसी ने बताया कि आज राजभवन राजस्थान सरकार के अधिकारी RAS मुकेश कुमार, दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विकेश मेहता, अर्हन मेहता, मयूर मिल के अधिकारी नरेंद्र भंडारी, केंद्र कोऑर्डिनेटर वीरेंद्र जी चौबीस, तहसील कोऑर्डिनेटर डॉ. हितेश चंद्र स्वर्णकार, दिलीप पुरोहित, सौरभ स्वर्णकार, गुणवंत सुथार व हार्टफुलनेस टीम बांसवाड़ा के पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में दिगंबर जैन मंदिर परिसर में बागीदौरा समाज के विनोद दोसी, कुंथू नवयुवक मंडल के अध्यक्ष दीपक दौसी, दिनेश दोसी, पंकज दोसी, लक्ष्मी लाल दोशी ने अतिथियों का स्वागत किया राज भवन के अधिकारी मुकेश कुमार ने विनम्र सागर जी महाराज को हार्टफुलनेस संस्थान हैदराबाद कन्हा शांतिवनम की जानकारी प्रदान की एवं ध्यान योग विषय पर चर्चा की, वहीं समाजसेवी विकेश मेहता ने कहा कि बागीदौरा में भी एक ध्यान शिविर लगाया जाए। इसके बाद सभी समाजसेवी दयोदय गौशाला में गायों की सेवा करने के लिए गए वहां पर उपस्थित गौशाला के पदाधिकारी मोहन तलाटी एवं प्रदीप दोसी ने सभी पदाधिकारीयों का दुपट्टा पहनाकर एवं माल्यार्पण स्वागत किया वहीं गौशाला के बारे में जानकारी दी। सभी समाजसेवियों ने गायों को गुड़ एवं चारा खिलाकर सेवा की, इस अवसर पर मुकेश कुमार जी ने सभी उपस्थित समाजसेवियों को ध्यान भी करवाया। समाजसेवी विकेश मेहता ने गौशाला में कहा कि विगत 20 वर्षों से सभी समाजसेवी इस गौशाला में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं यह जिले की सबसे बड़ी गौशाला है, इसके उत्थान के लिए और भी कार्य किए जाएंगे।

संस्कृति संरक्षण की उपाधि से सम्मानित किया गया

शेखरचंद पाटनी

राष्ट्रीय संवाददाता

श्री दिगम्बर जैन मंदिर जी सुजानगढ़ में रक्षाबंधन के पावन दिवस पर श्री अशोक कुमार बिनायक्या सुजानगढ़ का श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा लखनऊ से भेजे गये अभिनन्दन पत्र प्रदान करके संस्कृति संरक्षण की उपाधि से सम्मानित किया गया।

प्राचीन जैन तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण व जीर्णोद्धार के कार्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री बिनायक्या को यह उपाधि महासभा की तरफ श्री डा. सरोज छाबड़ा व समाज के मंत्री श्री पारस मल बगड़ा ने प्रदान की। श्री अशोक बिनायक्या ने यह सम्मान दिगम्बर जैन समाज के उन सभी सदस्यों को समर्पित करते हुए कहा कि यह सम्मान आप सभी दानवीरों का है जिन्होंने अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करके इस पुण्य कार्य में मुझे सहयोग दिया तथा आगे भी आप सबका सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। जैन समाज के काफी बड़ी संख्या में सदस्य उपस्थित थे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
With Best Compliments from
ASHOKA FURNISHINGS
a complete furnishing store
Babu Bazar, Fancy Bazar
GUWAHATI- 781001
0361- 2514118, 2637326Fax : 0361- 2637325
Sanmati Plaza, G. S. Road. Guwahati-781005 2457801, 2457802

क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये
आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

ऋषभ कुमार सेठी,
कविता जैन, अंकुर जैन,
अंचल जैन, हरिधान सेठी,
अनुज जैन, नेहा जैन,
विरान्स जैन,
राघव जैन, काव्या जैन
तिलक नगर, जयपुर (राज.)
मो. 9414041003

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या फूलकर,
हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी,
अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

गजेन्द्र जैन, कुनकुरी
राष्ट्रीय महामंत्री- श्री भारतवर्षीय
खंडेलवाल दिगम्बर जैन महासभा,
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-श्री भारतवर्षीय
दिगम्बर जैन महासभा
मो. 09425251222

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या भूलकर,
हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी,
अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

ज्ञानचन्द्र पाटनी
दुर्ग
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन
(तीर्थ संरक्षिणी) महासभा
मोबा. 9893182255

'उत्तम क्षमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई '
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

राज कुमार टोंग्या-श्रीमती सुनीता टोंग्या
अभिनव जैन, मेघा जैन, नेहा, खुशी, रूही
Rajkumar Tongya
Shrut Sanvardhini
Mahasabha, Dream House,
Godrej Building
G. S. Road, Ullu Bari,
Guwahati, Assam
Cell : 09864027882

क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये
आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

नरेन्द्र-अंजु काला,
विकास-स्नेहलता, प्रवीण-पूजा
दर्शन-दर्शिका, रिया, वारिधि, मानविक
एवं समस्त काला परिवार
जैन रेडीमेड सेन्टर,
किशनगढ़ रेनवाल जयपुर (राज.)
मो. 8302351051

"सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

मुकेश-नीतू, यमिषा,
हिमांशी सिंघवी (जैन)
ऋषभ ज्वैलर्स
उदयपुर (राजस्थान)
मो. 9214073614

"सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Shubham Jain
Energy Developers
House No- 419-420-421,
Sector-17 Faridabad-
121004 (Haryana)
Mob. 8826115116

क्षमा करना और मांगना वीरों का कार्य है

सामूहिक कब्र मामले में शांति बनाए रखने की अपील

स्वराज जैन

मंगलुरु, 29 अगस्त। प्रसिद्ध धर्मस्थल मंदिर के धर्माधिकारी और भाजपा के राज्यसभा सदस्य वीरेंद्र हेगड़े ने कथित सामूहिक कब्र मामले से जुड़े हालिया घटनाक्रम के मद्देनजर श्रद्धालुओं से शांति बनाए रखने की अपील की है। शुक्रवार को धर्मस्थल में बोलते हुए वीरेंद्र हेगड़े ने कहा कि - हाल की घटनाओं के कारण पुरुषों से ज्यादा महिलाएँ पीड़ा में हैं। ये महिलाएँ किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। हालाँकि ऐसी कोई जरूरत नहीं है। हमने अपना सब कुछ भगवान मंजूनाथ को समर्पित कर दिया है। मैं कभी सत्य से विचलित नहीं हुआ और न ही कभी होऊँगा। सभी को शांति और व्यवस्था बनाए रखनी चाहिए और धैर्य रखना चाहिए। अगर धर्मस्थल क्षेत्र के खिलाफअभियान जारी रहा तो हम विधानसभा तक अपनी आवाज पहुँचाएँगे। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा एवं अन्य संस्थाओं ने श्री नरेंद्र मोदी जी को पत्र भेजा, जैन समाज में यह खबर मिलते ही सब एकजुट हो गए। उन्होंने कहा कि हम हमेशा न्याय के पक्ष में खड़े हैं। जो लोग बदनाम करने वाले अभियान चलाते हैं, वे इंसानियत से पेश नहीं आ रहे हैं। हेगड़े के प्रयासों से अनगिनत मंदिरों का जीर्णोद्धार हुआ है। गरीबों और जरूरतमंदों को उदार सहायता मिली है। धर्माधिकारी डी. वीरेंद्र हेगड़े ने कहा कि चूँकि एसआईटी जाँच आगे बढ़ रही है, इसलिए मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा। सत्य का

एक ही चेहरा होता है। हम सत्य के मार्ग से नहीं हटेंगे। लोगों को धैर्य रखना चाहिए और शांति और सद्भाव बनाए रखना चाहिए।

मंदिर प्रबंधन के साथ एकजुटता व्यक्त करने और चल रहे दुष्प्रचार की निंदा करने के लिए धर्मस्थल आए जैन संतों का धन्यवाद करते हुए हेगड़े ने कहा कि उनके समर्थन ने तीर्थस्थल को नई ताकत दी है, उन्होंने आगे कहा चूँकि विशेष जाँच दल (एसआईटी) की जाँच चल रही है, इसलिए मुझे ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहिए। हालाँकि, श्रद्धालुओं ने अपनी पीड़ा व्यक्त की है। धर्मस्थल मंदिर को निशाना बनाकर की जा रही इन घटनाओं के शुरू होने के बाद से वे शोक में हैं और अपनी मानसिक शांति खो चुके हैं। कई लोगों ने हमें बताया है कि वे किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं, खासकर महिलाएँ आंदोलन करने के लिए तैयार हैं। लेकिन ऐसी कार्रवाई की कोई जरूरत नहीं है। हमने भगवान मंजूनाथ को सब कुछ समर्पित कर दिया है, और हमें इसके परिणाम भी दिखने लगे हैं, हेगड़े ने परोक्ष रूप से नकाबपोश व्यक्ति चिन्नैया की गिरफ्तारी का जिक्र करते हुए कहा। उन्होंने आगे कहा - सत्य के दो चेहरे नहीं होते, उसका केवल एक ही चेहरा होता है। धर्म चाहे कोई भी हो, सच्चे भक्तों को उसके आगे समर्पण करना ही चाहिए। अन्यथा, वे सच्चे भक्त नहीं हैं। मेरे द्वारा उठाया गया हर कदम ईश्वर द्वारा निर्देशित और आशीर्वादित होता है। हम सत्य के मार्ग से कभी नहीं भटके हैं और न ही कभी भटकेंगे। मैं सभी भक्तों से शांति बनाए रखने की अपील करता हूँ। तमिलनाडु के संत भी समर्थन में पहुँचे हैं। उनके एक इशारे से ही हजारों लोग इकट्ठा हो सकते हैं। हालाँकि, धैर्य ही कुंजी है। इस बीच मैसूर के प्रमुख सुत्तुर मठ के शिवरात्रि देशिकेंद्र महास्वामीजी ने धर्मस्थल के संबंध में एक खुला पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने कामना की है कि संघर्ष के सभी बादल छँट जाएँ और शांति और सद्भाव कायम रहे। प्रमुख लिंगायत संत ने धर्माधिकारी वीरेंद्र हेगड़े के आचरण और कार्य की भी प्रशंसा की है।

सुत्तुर संत ने कहा, 'श्री क्षेत्र धर्मस्थल ने प्राचीन मंदिर कलाकृतियों, स्मृति चिन्हों और पांडुलिपियों के संग्रह और प्रदर्शनी की व्यवस्था की है। विभिन्न संगठनों के माध्यम से वे ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं। 1972 से सामूहिक विवाहों का आयोजन करके उन्होंने आम लोगों को फिजूलखर्ची वाले विवाह समारोहों के आर्थिक बोझ से मुक्त किया है - यह सचमुच एक सराहनीय पहल है।

सफल संयोजन के लिए जैन गजट के सह संपादक राजेन्द्र महावीर हुए सम्मानित

शांति समागम राष्ट्रीय पत्रकार संगोष्ठी टोंक में सम्पन्न

सनावद। बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत पंचम पट्टाधीश, राष्ट्रगौरव, वात्सल्य वारिधि, आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में शांति समागम राष्ट्रीय पत्रकार संगोष्ठी का शानदार आयोजन धर्म नगरी टोंक राजस्थान में सम्पन्न हुआ। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व संगोष्ठी के राष्ट्रीय संयोजक, जैन गजट के सह संपादक राजेन्द्र जैन महावीर सनावद के संयोजन में देश भर के सम्पादक पत्रकार, संवाददाता, यूट्यूबर स्वतंत्र, लेखक, एकत्रित हुए। जैन सन्देश के संपादक अनूपचंद जैन फिरोजाबाद ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधन किया। आचार्यश्री वर्धमान सागर जी महाराज, मुनिश्री हितेन्द्र सागर जी महाराज सहित अनेक वक्ताओं ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला। अध्यक्षता रमेश

तिजारिया जयपुर मुख्य अतिथि टोंक जिला प्रमुख सरोज बसल, इंजी आशीष जैन धार, निर्देशक डॉ. चीरजीलाल बगड़ा, महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन जयपुर, स्थानीय संयोजक पवन जैन कटान, युवा विद्वान लेखक डा. सुनील संचय ललितपुर आदि ने कुशल संयोजन व सशक्त संचालन हेतु राजेन्द्र जैन महावीर को विशेष रूप से सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि श्री जैन के संयोजन में मात्र एक सप्ताह पूर्व की सूचना पर देश भर के शताधिक सम्पादक, पत्रकार सहभागी बने।

स्वतंत्रता दिवस पर झण्डारोहरण

महावीर प्रसाद अजमेरा, जोधपुर

जोधपुर। शुक्रवार 15 अगस्त, 2025 को 79वां स्वतंत्रता दिवस पर प्रातःकाल 9 बजे रोज मेरी पब्लिक स्कूल, पावससी रोड, जोधपुर में श्रीमान् महावीर प्रसाद अजमेरा, वरिष्ठ जैन गजट संवाददाता, जोधपुर ने झण्डारोहण किया। श्री महावीर प्रसाद अजमेरा ने अपने 83वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में गरीब बच्चों व पढ़ने में होशियार छात्रों को कॉपिया, पेन्सिल, पेन व मिठाई का वितरण किया। इसके अलावा पाठशाला को 1 हजार रूपये का चेक दिया। इस अवसर पर छात्रों को स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर सन्देश दिया कि आप सबसे पहले उठकर भगवान को याद करें फिर बड़ों को प्रणाम करें। पाठशाला में आने पर अपने गुरूओं का चरण छूकर प्रणाम करें। आपको अपने राष्ट्र की रक्षा करनी है। आप पाठशाला का कार्य प्रतिदिन पूरा करें। यहां पर पौधे लगे हुये हैं उनकी भी रक्षा करनी चाहिये। पानी, हवा और पर्यावरण की रक्षा करनी है। जिन महापुरूषों ने आजादी के लिए बलिदान दिया उनको हमेशा स्मरण करना चाहिये। 'मेरी भावना' पुस्तक को प्रत्येक सुबह जरूर पढ़ें।

पुष्पेन्द्र जैन की 112वीं जयंती पर तीन साहित्यकार हुई सम्मानित

वीर पीयूष जैन
मंत्री- जैन मिलन, लखनऊ

लखनऊ। जैन मिलन लखनऊ द्वारा यूपी प्रेस क्लब में कवि 'पुष्पेन्दु' जैन जी की 112 वीं जयंती के सुअवसर पर आयोजित सम्मान समारोह की अध्यक्षता वीर शैलेन्द्र जैन (संरक्षक-भारतीय जैन मिलन), मुख्य अतिथि - मा. मुकेश शर्मा (सदस्य विधान परिषद, उ. प्र. शासन), अति विशिष्ट अतिथि- श्री राघवेन्द्र शुक्ल (जनसम्पर्क अधिकारी मा. रक्षामंत्री भारत सरकार) एवं विशिष्ट अतिथि-वीरांगना राजकुमारी पुष्पेन्दु जैन (धर्मपत्नी - कवि पुष्पेन्दु जैन) के रूप में मंच पर शोभायमान रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ शारदे एवं कवि पुष्पेन्दु जैन के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पेन्दु जी द्वारा रचित

सरस्वती वंदना उनकी बेटियों द्वारा सस्वर पढ़ी गई। सभी के प्रति संस्था के अध्यक्ष वीर डा. ए. के. जैन ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर कवि पुष्पेन्दु जैन का पूरा परिवार उपस्थित रहा।

वीरांगना राजकुमारी पुष्पेन्दु जैन जी ने सभी के प्रति विशेषकर जैन मिलन लखनऊ के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार प्रदर्शन मंत्री वीर पीयूष जैन ने किया। इस अवसर पर वीर सुकुमाल जैन (मुख्य संयोजक), वीर संजय जैन (कोषाध्यक्ष), पूर्वाध्यक्ष वीर विशाल जैन, नलिनकांत जैन, वीर पर्यूषण कुमार जैन, अवधेश 'नमन', नवीन शुक्ल 'नवीन', अनिल मिश्र, मृत्युंजय प्रसाद गुप्त, पूनम अग्रवाल, सुधा, आरती, डॉ. रमा अग्रवाल एवं डा. उमेश चन्द्र श्रीवास्तव आदि की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :

श्री कुलदीप कुमार जैन
एडीटर-करूणदीप मैगजीन
ट्रस्टी श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

एडवोकेट विकास जैन दिल्ली
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

शेष पृष्ठ 1 का....

बुरे के साथ बुरा बनना नासमझी है। क्षमापना से आत्मा में प्रसन्नता की अनुभूति होती है। जो किसी के साथ बैरभाव रखता है उसके मन में कभी शान्ति नहीं मिल पाती। लो जान लो एक राज - इच्छा, अहं और अपेक्षा का त्याग कर दों, क्रोध आयेगा ही नहीं। उत्तम क्षमा आ जायेगी। बैर से बैर कभी शान्त नहीं होता, सिर्फ प्रेम से ही बैर शान्त होता है, उत्तम क्षमा जागृत हो जायेगी। जो गुस्सा पी जाते हैं और लोगों को माफकर देते हैं वह उत्तम क्षमा की श्रेणी में आ जाते हैं। यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करता है तो उसे क्षमा कर दो क्योंकि उत्तम क्षमा करना वीरों का काम है। दण्ड देने की शक्ति होने पर भी दंड न देना वह उत्तम क्षमा है। अपने प्रति किये अपराधों को भी क्षमा करना केवल सज्जन ही जानता है। उत्तम क्षमापना केवल अपनों से ही नहीं अपितु उन विरोधी शत्रुओं से भी करना चाहिये, जिससे बैर की गांठ पड़ी हुई है इसे ही उत्तम क्षमा कहते हैं। आचार्य श्री कहते हैं कि निर्धन होने पर भी तन-मन-धन से दान की भावना रखना, प्रतिकार करने का सामर्थ्य होने पर भी क्षमा का भावना रखना यही उत्तम क्षमा है। शान्त रहने की असली आवश्यकता तब है, जब कोई आप पर गुस्सा करें या आपकी अपेक्षा करें।

- महावीर प्रसाद अजमेरा,संवाददाता, जोधपुर

शेष पृष्ठ 5 का............

प्राचीन आगम परंपरा में परिवर्तन, बदलाव करने से समाज में विवाद और विघटन होता है। साधु का हमेशा उदासीन भाव रहना चाहिए। ट्रस्ट मंदिर संपति का निजी उपभोग हानिप्रद है। उन्होंने कहा कि एकल विहार का मतलब अपनी प्रभावना करना है, इससे धर्म की प्रभावना नहीं होती है। साधु संघ सहित विहार करे, एकल विहार न करे।

आचार्य श्री शांतिसागर जी श्रमण

साधु परम्परा कुल के पितामह थे, हैं और रहेंगे। आचार्यश्री आत्मविद्या के महाज्ञानी थे उनमें आत्मज्ञान बहुत था, आत्मा ही सर्वश्रेष्ठ है, वह अनासक्ति के सर्वोच्च शिखर पर रहे। गृहस्थ अवस्था से वह अनासक्ति और निष्प्रही रहे, उनमें बचपन से वैराग्य और चारित्र था, वह अपने ज्ञान से सभी को वह स्वाध्याय की प्रेरणा देते थे। हम उनके जैसी तपस्या नहीं कर सकते किंतु समन्वय का गुण, संघ परंपरा अनुसार आज भी विद्यमान हैं। इस अवसर पर मुनि श्री हितेंद्रसागर जी महाराज ने आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज को चारित्र चक्रवर्ती की उपाधि की उपादेयता के बारे में अपने ओजस्वी प्रवचनों में बताया। उन्होंने कहा कि बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी ने मुनिचर्या का पुनरूत्थान, चतुर्विध संघ की स्थापना, जिनालय संरक्षण, गृहीत मिथ्यात्व का त्याग, जैन मंदिर संकट निवारण आदि अनेक ऐतिहासिक कार्य किए। उन्होंने कहा कि विद्वानों में वह पावर है जिसके पावर से पूरे समाज को एक झंडे के तले ला सकते हैं।

विद्वानों का हुआ सम्मान – इस अवसर पर सभी विद्वानों का वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमानसागर वर्षायोग समिति एवं सकल जैन समाज टोंक के पदाधिकारियों अध्यक्ष धर्मचंद जैन दाखिया, भागचंद जैन, संयोजक कमल आंडरा, अशोक झिराणा, राजेश जैन, अनिल कंटान, सुमित दाखिया, अमित दामुनिया, लोकेश जैन आदि ने प्रमाण पत्र, माला, तिलक, स्मृति चिन्ह, साहित्य, दुप्पट्टा आदि के द्वारा भव्य सम्मान किया। इस मौके पर टोंक जिला प्रमुख श्रीमती सरोज बंसल प्रमुख रूप से उपस्थित रहीं। संगोष्ठी में स्थानीय विद्वान राजीव जैन शास्त्री, अनिल जैन शास्त्री, रजनीश शास्त्री लावां आदि भी उपस्थित रहे। संगोष्ठी को सफल बनाने में स्थानीय प्रभारी सुमित दाखिया, अमित छमुनिया, अनिल कंटान, अंशुल आरटी, सुनील जैन आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा। इस मौके पर आचार्यश्री के संघ में सल्लेखनारत मुनि श्री चिन्मय सागर जी महाराज के दर्शन करने विद्वान पहुंचे और संवाद किया।

TODAY
BHADRESH & BHAVESH GROUP
शब्दों को दें शुद्धि
विचारों को दें क्षमा
कर्मों के दोष भूलकर
मेरी पवित्र करें आत्मा
MICHHAMI DUKKADAM
With Folded Hands and Humble Soul,
We Seek Forgiveness for Our Hurtful
Thoughts, Words and Actions towards You
Rajesh Shah
Chairman
Bhadresh Shah
Managing Director
Bhavesh Shah
Joint Managing Director

अपने को आत्मा न मानना ही तो क्रोध है

क्षमावाणी के परम पुनीत पावन स्वर्णिम शुभ अवसर पर भारतवर्ष के समस्त श्रद्धालुओं से हृदय के गहन स्थल से हार्दिक क्षमा याचना व सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधुसन्तों के पावन चरणों में

नमन शत् शत् अभिनंदन

नेमीनाथ भगवान छोटा गिरनार जी बापू गांव

मुनिश्री 108 प्रज्ञासागर जी मुनिराज का मंगल आशीर्वाद

अनिल कुमार जी पाण्ड्या (संरक्षकः प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र, छोटा गिरनार)

श्रीमती उषा जी पाण्ड्या बनेठा वाले

उत्तम क्षमा

उत्तम क्षमा

-: क्षमाप्रार्थी/शुभाकांक्षी:-

नितिन-निशा जैन, विपिन-श्रीमती परमा जैन (पुत्र-पुत्रवधु), अदिति, जीविशा, इनायशा (पौत्रियां) एवं समस्त बनेठा वाला परिवार, सांगानेर, जयपुर (राज.)

– : प्रतिष्ठान :–

USHA TEXTILES, Ashawala Sikarpura Road, Sanganer, Jaipur (Raj.) USHA DYEING WORKS, 2 - Prem Colony, Behind Hanuman Tube Well Co., Tonk Road, Sanganer, Jaipur (Raj.) Nemi Nath Petrol Pump Kareda, Kothun Lalsot Road (Raj.)

Mo. 9829068263, 9829058263, 9928367143

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काय से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

मुनिपुंगव श्री सुधा सागर बालिका छात्रावास

पुण्योदय तीर्थक्षेत्र नसियां जी दादाबाड़ी, कोटा (राजस्थान)

प्रवेश प्रारंभ

वातानुकूलित (AC) रूम, अटैच लेटबाथ, सिंगल एवं डबल रूम, कोचिंग तक आने-जाने की सुविधा, 24 घंटे महिला सुरक्षा गार्ड, पूर्ण सुरक्षित परिसर में स्थित शुद्ध सात्विक भोजन

संपर्क: 9829038906, 7597478711, 6376531154

अध्यक्ष व शिरोमणि संरक्षक **श्रीमती अर्चना जैन (रानी)** दुगेरिया सर्राफ

डॉ. संतोष जैन (परम संरक्षक) निर्देशक **श्रीमती उषा जैन बाकलीवाल** श्रीमती निशा जैन वेद (सचिव)

कोषाध्यक्ष **श्रीमती छाया जैन** हरसोरा एवं समस्त छात्रावास परिवार

भगवान आदिनाथ

हमारी प्रेरणास्त्रोत

धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी, व्यवहार कुशल, मुनिभक्त एवं देवशास्त्र गुरू के अनन्य भक्त

स्व. श्रीमती कंचन बाई जैन

स्वर्गवास 30 अगस्त, 1988 की 37 वी. पुण्यतिथि दिनांक 30 अगस्त 2025 पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

ये दुनिया तेज धूप, पर वो तो बस छाँव होती है।
स्नेह से सजी, ममता से भरी, माँ तो बस माँ होती है।

:– श्रद्धावनत :–

विमल चन्द जैन, महावीर प्रसाद जैन, प्रकाश चन्द जैन, ज्ञानचन्द जैन एवं समस्त परिवार (दरा स्टेशन, जिला कोटा)

:– प्रतिष्ठान :–

श्री जैन ट्रेडिंग-अग्रवाल फार्म मानसरोवर, श्री जैन प्रोपट्रीज-अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर शाह आर्किटेक्ट-बनीपार्क, जयपुर, श्रीमाल किराणा स्टोर, दरा स्टेशन, कोटा

सौजन्य से : मीना जैन मैमोरियल ट्रस्ट, 119/538, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर, मो. 9413301367, 9772201367

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षो में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

नवरत्न जैन

श्रीमती शकुन्तला जैन
फागी वाले जयपुर, चण्डीगढ़

-: श्रमण संस्कृति संरक्षक :-

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन महासभा
वर्तमान अध्यक्षः श्री दिगम्बर जैन समाज, चण्डीगढ़
विनोद कुमार-श्रीमती सुलोचना जैन,
प्रमोद कुमार-श्रीमती विनिता जैन,
राजेश कुमार-श्रीमती स्नेहलता जैन,
दीपक कुमार-श्रीमती चेतना जैन
सहित सभी (चौधरी) जैन परिवार फागी,
जयपुर वाले (चण्डीगढ़)

फर्म : पी. के. एजेन्सीज, आर्टिफिशियल ज्वैलरी (चण्डीगढ़) एवं जैन एजेन्सीज, वैशाली बिन्दी के विक्रेता, सदर बाजार, नई दिल्ली

पताः 1467, सेक्टर - 40 बी, चण्डीगढ़ (यू. टी.)
मो. 09417112412, 8360411923

क्षमावाणी पर्व पर विगत् वर्ष में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा

Dinesh Choudhary 9828172726
Suresh Choudhary 9929043722
Gopal Lal Dinesh Kumar
Mfg. All Brss Singhasan & Jain, Mandir Item & Export Item

परस्परोपग्रहो जीवानां

महावीर जयंती के जुलूस के लिये पालकी के लिये संपर्क करें।

97, Kishanpole bazar Jaipur,
E-mail : sureshmetals93@gmail.com

स्व. 16.8.2004

धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी, व्यवहार कुशल, मुनिभक्त एवं देव शास्त्र गुरु की परम भक्त स्व. श्रीमती शांति देवी धर्मपत्नी स्व. श्री माणक चंद जी गोयल जैन लदाना वालों की 21 वीं पुण्यतिथि 16.8.2025 पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

-: श्रद्धासुमन अर्पितकर्ता :-

महावीर कुमार-श्रीमति सुनिता जैन, विनोद कुमार-श्रीमति शशि जैन, वीरेन्द्र कुमार-श्रीमति अल्का जैन (CA) (पुत्र-वधु), मंजू-शिखरचंद जी जैन, केकड़ी (पुत्री-दामाद), मितेश जैन-श्रीमति टीना जैन, अंकित-सुरभी, रवि-दीप्ती आशीष-ज्योति (पौत्र-पौत्रवधु), मीनू जैन-शिखर चंद जी जैन अजमेर, रीना जैन-योगेश जी जैन जयपुर, आस्था-अनुराग जी (पौत्री-दामाद), अनुषा जैन (RAS), एकांश (पौत्र-पौत्री), अक्षिता, तनवी, छवि, अयांश, अंशी (पड़पौत्र-पड़पौत्रियां) एवं समस्त गोयल परिवार लदाना वाले फागी जयपुर (राज.)

प्रतिष्ठानः गोदरेज व वोल्टास शोरूम, शान्तीनाथ इन्टरप्राइजेज, 70/72-AV, टावर पटेल मार्ग, मान सरोवर जयपुर जैन बर्तन भंडार, फागी 9829061472

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काया से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमाा याचना करते हैं

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

धर्मचंद पहाड़िया

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
राष्ट्रीय प्रमुख तीर्थ रक्षक गुल्लक योजना
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

कार्यालयः श्री मेंशन, 22 गोदाम, जयपुर
फोनः 0141-2218282 मो. 9829054646

क्रोध की अग्नि किसी और को नहीं, अपने को ही जलाती है

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

मुनिभक्त दानवीर स्व. श्री हंसराज जी जैन अग्रवाल व स्व. श्रीमती चांददेवी जैन एवं स्व. श्री प्रकाशचन्द जी जैन मारूजी लाम्बा वाले परिवार

श्रीमती गायत्री जैन-ध.प.स्व. श्री प्रकाश चन्द जी जैन, गोविन्द जैन-श्रीमती राज जैन (जर्मनी वाले), जगदीश चंद जैन-श्रीमती रेखा रानी जैन, कमल जैन-श्रीमती सुनीता जैन (पुत्र-पुत्रवधु), जितेन्द्र जैन-श्रीमती नियती जैन, विकास जैन-श्रीमती प्रियंका जैन (जर्मनी वाले), अंकित जैन-श्रीमती याशिका जैन, विशाल-श्रीमती अतिका जैन (पौत्र-पौत्रवधु) अमन, प्रांजल एवं डेलिशा (ईशान व विवान जर्मनी वाले) (प्रपौत्र, प्रपौत्री)

प्रतिष्ठानः हंसराज एण्ड कम्पनी, 75, जौहरी बाजार, जयपुर फोन 0141-2577150, एच.आर.पैलेसः गोविन्द विकास जैन (जर्मनी वाले), 48-49, चौड़ा रास्ता (नियर साईबाबा मंदिर), जयपुर (राज.) Jainas Import Export Co. Bangkok (Thailand) J.V. Diamonds Bombay

आवासः 39, प्रताप नगर, स्कीम-3, ग्लास फैक्ट्री के पास, टोंक रोड, जयपुर (राज.) 0141-2702814

श्री नेमिनाथाय: नमः

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

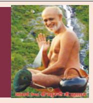
आ. 108 श्री वसुनंदी जी महामुनिराज

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

-: शुभाकांक्षी :-

समाज गौरव पदम जैन बिलाला-पुष्पा जैन बिलाला

पारस जैन बिलाला (CA)-दीपिका जैन, पद्दुम जैन बिलाला (ER)-रूचिका जैन, आदिश्री, आदिश, आदित, आदिवा एवं समस्त बिलाला परिवार

-: फर्म :-

जैन पारस बिलाला एण्ड कम्पनी (CA)
कार्यालयः 50 क 2, ज्योति नगर, जयपुर-05
शाखाएं - नई दिल्ली, मुम्बई, नोएडा, कोटा, उदयपुर, जोधपुर

निवासः 21, शिवा कॉलोनी, इमली फाटक, जयपुर-15

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

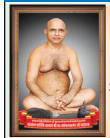

श्री पर्यूषण पर्व की भारतवर्ष के समस्त श्रद्धालुओं को हार्दिक शुभकामना व गतवर्ष जाने अनजाने में हुई गल्तियों के लिए क्षमा याचना

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

राजाबाबू गोधा जैन
जैन गजट संवाददाता-राज. फागी, जिला जयपुर (राज.) मो. 9460554501

आत्म शुद्धि के महान दशलक्षण पर्व के समापन एवं क्षमा पर्व पर मन वचन काय से प्राणी मात्र से क्षमायाचना

-: क्षमा प्रार्थी :-

नीरज शर्मा
9829139519, 9829021639, 9414250091

ओम प्रकाश शर्मा-श्रीमती विमला देवी शर्मा, नीरज शर्मा-श्रीमती स्वेता शर्मा (पुत्रवधु), नीलम (पुत्री), गोरांग व तनिष्क (पौत्र)

वन्दना आर्ट पैलेस
(निर्माता एवं विशेषज्ञ)
संगमरमर एवं धातु की जैन मूर्ति, वैष्णव मूर्ति, स्टेच्यु, वेदी एवं छतरी
निवास - 260, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड, जयपुर-18
फोन- 0141-2711615
E-mail- info@vandanaartpalace.com
Web : www.vandanaartpalace.com

कार्यालयः 3279, भिण्डो का रास्ता, राजाराम धर्मशाला के पास, दूसरा चौराहा, चांदपोल बाजार, जयपुर- 01

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधुसन्तों के पावन चरणों में नमन

-: क्षमा प्रार्थी :-

श्रीमती ललिता देवी चांदवाड़
धर्मपत्नी स्व. श्री बृजेश कुमार चांदवाड़, वरूण-श्रीमती सोनिया, विनीत-रश्मि (पुत्र-वधु), वंश, रूहिका चांदवाड़ (पौत्र-पौत्री), श्वेता-मनीष जी जैन (बेटी-दामाद) सहित समस्त चांदवाड़ परिवार

प्रतिष्ठानः चांदवाड़ फाइनेन्स ब्रोकर, 769, बोरडी का रास्ता, किशन पोल बाजार, जयपुर (राज.) मो. 9314037392, 9828021195

निवासः ए-86, सिद्धार्थ नगर, टोंक रोड, जयपुर-302017 (राज.)

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्ष में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

क्षमाप्रार्थी/शुभाकांक्षी

श्री सुनील पहाड़िया-श्रीमती नीना पहाड़िया
महामंत्री धर्म जागृति संस्थान राजस्थान प्रांत

क्षमाप्रार्थी

अभिनव पहाड़िया (पुत्र), रोमिका-सारंग काला चंदलाई वाले, अर्पिता-अंकित पाटोदी (नावा वाले), सोनीपत (बेटी दामाद), सुजय, राजवी, सुयश और मौलिक (दोहिता- दोहिती) तथा समस्त पहाड़िया परिवार जयपुर (राजस्थान)

निवासः 111/423 अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान) मो. 93149-95657, 93148-85657

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काया से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्युषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

-: क्षमा प्रार्थी :-

राजकुमार जैन
राज मेटल्स

मोती के चवर, गोटा के चवर, छत्र, भामण्डल, मंगल कलश पंचमेरू, शिखर कलश, पाण्डुक शिला, अष्ट प्रातिहार, अष्ट मंगल, सिंघासन, जिनवाणी कवर, ध्वजा, अक्षार, चंदोवा, पटके, मुकुट हार, बैच एवं मंदिर आईटम के निर्माता एवं विक्रेता

09993034735

राजकुमार जैन, फूटाताल स्कूल के पास, 702, हनुमानताल, जबलपुर (म.प्र.) 482002

आ. विद्यासागर जी महाराज

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्ष में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

प्रमाणसागर जी महाराज

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

परवेश जैन
मीनाक्षी जैन

परवेश-मीनाक्षी जैन, प्रांशु-श्वेता जैन, सुशील जी-प्रीति जैन (बेटी-दामाद), परितेश जैन, प्रिशा जैन, आद्या जैन, लब्धी जैन, दिविषा जैन सहित सभी परिवारजन, सहारनपुर वाले, जयपुर

आवासः 31, गायत्री नगर, चित्रकूट कॉलोनी, सांगानेर, थाना जयपुर-302015 (राज.) मो. 9024074666

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

कैलाशचन्द्र एवं श्रीमती स्नेहलता बैनाड़ा

ज्ञान चंद, सुनिल-अनिला, (भाई-बहू), अमित-प्रीति, (पुत्र-पुत्रवधु) भव्य, सानवी (पौत्र, पोत्री) सहित समस्त बैनाडा परिवार सांगानेर

पताः 52, चित्रकूट कॉलोनी, एयरपोर्ट सर्किल, सांगानेर, थाना जयपुर (राज.)

क्षमावाणी पर्व पर विगत् वर्ष में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

क्षमाप्रार्थी/शुभाकांक्षी

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर-6 हीरा पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

संरक्षक	अध्यक्ष	मंत्री
हंसराज लुहाड़िया 60/162 मो. 7427863719	धनकुमार कासलीवाल 69/418 मो. 9414359660	सुरेन्द्र कुमार जैन, 63/36 मो. 9829087096

उपाध्यक्ष-उत्तम चंद बोहरा, संयुक्त मंत्री-महेन्द्र कुमार बड़जात्या, कोषाध्यक्ष-सुरेश कुमार छाबड़ा, सह-कोषाध्यक्ष-विमल जैन, संगठन मंत्री-विशाल ठोलिया, सांस्कृतिक मंत्री-सुभाष चंद गोधा, राजेन्द्र कुमार सोनी, भंडार मंत्री-प्रकाश चंद पाटनी, प्रचार प्रसार मंत्री-अशोक जैन, भवन निर्माण मंत्री-बाबूलाल बिन्दायका, कार्यकारिणी सदस्य-देवेन्द्र कुमार वैद, दिनेश कुमार कासलीवाल, हीरालाल जी सेठी, राजेन्द्र कुमार सोगानी, राजेन्द्र प्रसाद गोधा, सुनील पाण्ड्या, वीरेन्द्र कुमार जैन, पंकज जैन
मो. 9314503719, 9414359660, 9829087096

जन्मतिथि-01.09.1920
पुण्यतिथि-08.09.1992

परम श्रद्धेय

स्वर्गीय श्रीमती सरोज देवी जैन रांवका

धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री कैलाशचन्द्र जी शास्त्री के 01.09.2025 पर 105वें जन्म दिन पर (शतायु पार) होने पर बहुत-बहुत मंगलमयी हार्दिक शुभकामनाएं

हमारी प्रेरणास्रोत सरल स्वभावी, सत्यनिष्ठ, देवशास्त्र गुरू के प्रति समर्पित व मुनिभक्त स्व. सरोज देवी रावंका की 33वीं पुण्यतिथि 08.09.2025 पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि एवं शत् शत् नमन

-: श्रद्धावनत् :-

डॉ. राजेन्द्र-उर्मिला, डॉ. निर्मल-शीला, सुरेन्द्र-इन्दिरा, रवि-आशिमा, प्रमोद-संगीता, मनोज-स्मिता जैन (पुत्र-पुत्रवधु), लता-अनिल जी शुक्ला (पुत्री-दामाद) एवं सरोज-निकेतन परिवार

निवासः डी-58, सरोज निकेतन, ज्योति मार्ग, बापूनगर, जयपुर-302015
मो. 9829123527, 9928282419

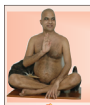

क्षमावाणी के परम पुनीत स्वर्णिम सुअवसर पर हृदय के गहन स्थल से अन्तर्मन मन से हार्दिक क्षमा याचना

: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

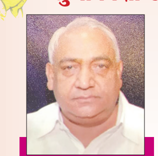
देव प्रकाश खंडाका जयपुर

सतीश खंडाका जयपुर

श्रीमती कल्पना खण्डाका एवं आदर्श खण्डाका, तृप्ति खण्डाका एवं समस्त खण्डाका परिवार, जयपुर (राज.)

प्रतिष्ठान- देव प्रकाश खण्डाका सर्राफ एण्ड कम्पनी ज्वैलर्स गोल्ड एवं सिल्वर ज्वैलर्स

179-किशनपोल बाजार, जयपुर-302001 (राज.)
फोन - 0141-2313635, 2205822

हमारे द्वारा वर्ष भर में हुई गल्तियों के लिए क्षमावाणी पर आपसे क्षमा चाहते हैं

-: क्षमाप्रार्थी :-

नरेश कासलीवाल
अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परिषद राज. प्रांत के मीडिया प्रभारी

श्रीमती नीना (पत्नी)
प्रियांक-प्रियांशी (पुत्र-पुत्रवधु)

18-ए, विश्वेशरिया नगर, त्रिवेणी रोड, जयपुर मो. 9462191401

ज्ञायक को भगवान न मानना ही तो क्रोध है

क्रोध से बंध व क्षमा से निर्जरा होती है

जैन गज़ट शिकायत 9415008344
जैन गज़ट

आत्मानुभूति का पर्व : दशलक्षण पर्व

प्रो. अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

दशलक्षण पर्व आत्मानुभूति करना सिखाता है, वह कहता है कि पाप से बचने का और कर्म बंधन से छूटकर निज शुद्धात्मा को प्राप्त करने का सबसे अच्छा उपाय है-भेद विज्ञान की दृष्टि। जो मनुष्य इस संसार में रहकर भी संसार से विरक्त रहने की कला सीखकर, संयम और तप पूर्वक अपनी आत्मा की आराधना करता है वह ही अपनी अनुभूति को प्राप्त कर पाता है। दशलक्षण पर्व हमें अपनी शुद्धात्मा से मिलने का सबसे बढ़िया अवसर देता है।

प्रायः प्रत्येक पर्व का संबंध किसी न किसी घटना, किसी की जयंती या मुक्ति दिवस से होता है। दशलक्षण महापर्व का संबंध इनमें से किसी से भी नहीं है क्योंकि यह स्वयं की आत्मा की आराधना का पर्व है। दशलक्षण पर्व आत्मा (अंतस) तथा उसे ज्ञान दर्शन चैतन्य स्वभावी मानने वालों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैन परंपरा में इन दिनों श्रावक-श्राविकाएं, मुनि-आर्यिकाएं (जैन साध्वी) पूरा प्रयास करते हैं कि आत्मानुभूति को पा जाएं, उसी में डूबें तथा उसी में रम जाएं।

मूलाचार, भगवती आराधना आदि आगमों में दसवें कल्प का नाम प्राकृत में पज्जोसवणा लिखा है, इसका संस्कृत रूप पर्युषणकल्प है, जिसका अभिप्राय है वर्षाकाल में चार महीने भ्रमण त्याग कर एक स्थान पर वास। पर्युषण का अर्थ चातुर्मास से लगाया जा सकता है। अतः इस दौरान जो भी पर्व आते हैं उन्हें पर्युषण पर्व कहा जा सकता है। आठ दिन आत्मा की आराधना करने वाले श्वेताम्बर संप्रदाय में इस पर्व को पर्युषण पर्व ही कहा जाता है। दशलक्षण भी इन्हीं चातुर्मास में आते हैं अतः उसे भी उपचार से पर्युषण पर्व कह दिया जाता है। पर्युषण का शाब्दिक अर्थ है-'परि आसमंतात् उष्यन्ते दह्यन्ते पाप कर्माणि यस्मिन् तत् पर्युषणम्' अर्थात् जो आत्मा में रहने वाले कर्मों को सब तरफ से तपाये या जलाये, वह पर्युषण है। दशलक्षण पर्व में दस दिन तक आत्मा के दश लक्षणों की उपासना की जाती है।

दशलक्षण का अर्थ –
धम्मस्स दसलक्खणं खमा मद्दवाज्जवसउयसच्चा।
संजमतवचागाकिंचण्हं बंभं य जिणेहिं उत्तं।।

जिनेन्द्र भगवान् ने धर्म के दसलक्षण कहे हैं - उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य।

क्षमा, मार्दव (अहंकार रहित), आर्जव (सरलता), सत्य, शौच (शुद्धि), संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य (परिग्रह का त्याग) और ब्रह्मचर्य जैसे दसलक्षण शुद्धात्मा के स्वभाव हैं, किंतु हम अपने निज स्वभाव को भूलकर परभाव में डूबे रहते हैं। अंतस के मूल शुद्ध स्वभाव को प्राप्त करने के लिए ही यह पर्व मनाया जाता है। पर्युषण पर्व सात्विक जीवन शैली के अभ्यास तथा आत्मानुभूति करवाने के लिए प्रति वर्ष आता है। ऐसा कहा जाता है कि इस विषम पंचम काल में भी जो इन दस धर्मों को यथा शक्ति धारण करता है, वह अतीन्द्रिय आनंद और अनेकांत स्वरूपी आत्मा को प्राप्त करता है -

धारइ जो दसधम्मो पंचमयाले णियसत्तिरूवेण।
सो अणिंदियाणंदं लहइ अणेयंतसरूवं अप्पं।।

दशलक्षण पर्व वर्ष में तीन बार मनाया जाता है। भाद्र, माघ तथा चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में पंचमी से लेकर चतुर्दशी तक दस दिन सभी भक्त अपनी-अपनी भक्ति तथा शक्ति के अनुसार व्रत का पालन करते हैं। चातुर्मास स्थापना के कारण भादों में आने वाले दशलक्षण महापर्व का महत्व वर्तमान में सर्वाधिक है। भाद्रपद शुक्ल पंचमी से भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तक दस दिन यह पर्व दिगंबर संप्रदाय में विशेष रूप से मनाते हैं इसे ही दशलक्षण महापर्व कहते हैं।

दशलक्षण पर्व की शुरुआत कब से हुई? इस प्रश्न का उत्तर किसी तिथि या संवत् से नहीं दिया जा सकता। ये शाश्वत पर्व है चूँकि आत्मा द्रव्यार्थिक नय (द्रव्य दृष्टि) से नित्य अजर-अमर है और धर्म के दशलक्षणों का भी संबंध आत्मा से है। अतः जब से आत्मा है तभी से यह पर्व है। अर्थात् अनादि अनन्त चलने वाला यह पर्व किसी जाति संप्रदाय या मजहब से नहीं बंधा है। आत्मा को मानने वाले तथा उसे ज्ञान दर्शन चैतन्य स्वभावी मानने वाले सभी लोग इस पर्व की आराधना कर सकते हैं।

पुराणों में दशलक्षण धर्म के व्रतों को पूर्ण करके मुक्त होने वाले अनेक भव्य जीवों की कथायें प्रसिद्ध हैं। मृगांकलेखा, कमलसेना, मदनवेगा और रोहणी नाम की कन्याओं ने दश धर्मों की आराधना मुनिराज के वचनानुसार की तो उनको भी अगले भव में इस पर्याय से मुक्ति मिली तथा आत्मानुभूति प्राप्त हुई। इसके अलावा भी सैकड़ों उदाहरण हैं जिनसे यह पता लगता है कि सम्यग्दर्शन पूर्वक दशलक्षण धर्म की आराधना करने वाले जीवों को मुक्ति प्राप्त हुई।

दशलक्षण पर्व की पूजन – दशलक्षण पर्व पर अन्य पूजनों के साथ साथ कुछ विशेष पूजनों को भी किया जाता है। प्रातः काल जिन मंदिरों में सार्वजानिक रूप से जिनेन्द्र भगवान् का अभिषेक होता है जिसमें श्रावक बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं। उसके उपरांत संगीत और बाजे गाजे के साथ सामूहिक पूजन पाठ भी बहुत भक्तिभाव पूर्वक होता है। नित्य नियम देव शास्त्र गुरु आदि पूजन के साथ साथ इसमें लगभग सभी जगह पंडित द्यानतराय जी की दशलक्षण पूजन अवश्य होती है, सोलहकारण और रत्नत्रय पूजन भी अवश्य की जाती है। किन्हीं-किन्हीं स्थानों पर दशलक्षण विधान का भी विशेष आयोजन होता है।

दशलक्षण पर्व मनाने की व्रत विधि – दशलक्षण पर्व पर तीन प्रकार के व्रत किये जा सकते हैं। अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार गृहस्थ इसका चुनाव करते हैं। उत्तम, मध्यम तथा सामान्य की अपेक्षा से व्रत की तीन विधियां हैं -

(1) उत्तम विधि - इसमें दस दिन का दस उपवास रखा जाता है। इसमें अन्न तथा फल दूध इत्यादि किन्हीं भी पदार्थों का सेवन साधक नहीं करता। कुछ साधक निर्जला उपवास भी करते हैं इसमें जल भी ग्रहण नहीं करते। यह विधि किसी उत्तेजना प्रतिक्रिया अथवा क्रोधवश नहीं अपनानी चाहिये अन्यथा व्रत का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता। सामान्य विधि तथा मध्यम विधि का कई बार अभ्यास हो जाने पर ही उत्तम विधि को क्रम से अपनाना चाहिए।

(2) मध्यम विधिकृपंचमी, अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी इन चार तिथियों में उपवास करना तथा शेष छह दिनों में एकाशन किया जाता है। एकाशन का अर्थ है दिन में एक बार, एक आसन में बैठकर, शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करना तथा दोबारा मुंह भी जूठा न करना।

(3) सामान्य विधि - दसों दिन मात्र एकाशन करना। इसके आलावा भी बाजार में बनी खाद्य वस्तुओं का भोग ना करना, रात्रि में भोजन नहीं करना तथा सामायिक करना आदि नियम भी लोग कड़ाई से पालते हैं।

स्वाध्याय की अनिवार्यता – उक्त तीनों विधियों को अपनाते समय सकुशल व्रत पूरे हों इसके लिए कुछ बातों की ओर भी ध्यान रखना चाहिए। कोई भी व्रत आकुलता-व्याकुलता में तथा जबरदस्ती न करें। अपना अधिकांश समय स्वाध्याय, पूजन तथा ध्यान करके बितायें। दशलक्षण पर्व पर शास्त्र प्रवचनों का भी विशेष आयोजन होता है। जैनदर्शन का मूलसूत्र ग्रन्थ है - तत्त्वार्थसूत्रम्, जिसकी रचना आचार्य उमास्वामि ने संस्कृत भाषा में प्रथम शताब्दी में की थी। इसमें दश अध्याय हैं, पर्व के दस दिनों में इस ग्रन्थ का विशेष स्वाध्याय अनिवार्य माना गया है।

नगर में यदि किन्हीं मुनिराज या आर्यिका (जैन साध्वी) जी का चातुर्मास हो रहा हो तो उनके मुख से तत्वार्थसूत्र का शुद्ध उच्चारण तथा दशों अध्यायों का भलीभांति सही अर्थ अवश्य समझ लेना चाहिए। दशधर्मों का मर्म भी वे समझाते हैं। यदि चातुर्मास स्थापना नहीं हो तो किन्हीं शास्त्र पारंगत विद्वान पंडित जी को इन दस दिनों में आमंत्रित कर उनका उचित सम्मान व सत्कार करके उनके मुख से तत्वार्थ सूत्र का सही उच्चारण सीखना चाहिए। तत्वार्थसूत्र के दशों अध्यायों का एक बार मनोयोग पूर्वक पाठ करने से एक उपवास का फल मिलता है। अपने आत्मा के समीप बैठने को भी 'उपवास' कहते हैं। यदि क्रोध, मान, माया, लोभ आदि सभी कषायों को त्याग कर स्व सन्मुख पुरुषार्थ की मुख्यता से शुद्धात्मानुभूति के लिए हम पर्युषण महापर्व को मनायेंगे और शास्त्रोक्त विधि से पालन करेंगे तो एक दिन अखण्ड शुद्ध बुद्ध सत् चित् आनन्द स्वभावी अपनी शुद्धात्मा की अनुभूति अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

अनंत चतुर्दशी – पर्व के अंतिम दिन को अनंत चतुर्दशी पर्व के रूप में मनाया जाता है, इस दिन छोटे छोटे बच्चे भी उपवास रखते हैं और विशेष पूजन आदि करते हैं।

क्षमावाणी पर्व – जैन परंपरा में दशलक्षण महापर्व के ठीक एक दिन बाद एक महत्वपूर्ण पर्व मनाया जाता है वह है- क्षमा पर्व।

जीवखमयंति सव्वे खमादियसे च याचइ सव्वेहिं।
'मिच्छा मे दुक्कडं' च बोल्लइ वेरं मज्झं ण केण वि।।

क्षमा दिवस पर जीव सभी जीवों को क्षमा करते हैं, सबसे क्षमा याचना करते हैं और कहते हैं मेरे दुष्कृत्य मिथ्या हों तथा मेरा किसी से भी बैर नहीं है।

इस दिन श्रावक (गृहस्थ) और साधु दोनों ही वार्षिक प्रतिक्रमण करते हैं। पूरे वर्ष में उन्होंने जाने या अनजाने यदि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के किसी भी सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव के प्रति यदि कोई भी अपराध किया हो तो उसके लिए वह उनसे क्षमा याचना करता है। अपने दोषों की निंदा करता है और कहता है - 'मिच्छा मे दुक्कडं' अर्थात् मेरे सभी दुष्कृत्य मिथ्या हो जाएँ। वह प्रायश्चित भी करते हैं। इस प्रकार वह क्षमा के माध्यम से अपनी आत्मा से सभी पापों को दूर करके उनका प्रक्षालन करके सुख और शांति का अनुभव करते हैं। श्रावक प्रतिक्रमण में

प्राकृत भाषा में एक गाथा है -
'खम्मामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूदेसु, वेरं मज्झं ण केण वि।'

अर्थात मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूं सभी जीव मुझे क्षमा करें। मेरा प्रत्येक प्राणी के प्रति मैत्री भाव है, किसी के प्रति वैर भाव नहीं है। इस प्रकार दिगम्बर जैन परंपरा में दशलक्षण पर्व का अचिन्त्य महात्म्य है।

सरकारी सिस्टम से व्यथित होकर दिगंबर जैन मुनि पावन सागर महाराज 3 सितंबर से सचिवालय के बाहर करेंगे अनशन

अनशन में शामिल होंगे हजारों जैन बंधुः भारत के स्वतंत्र होने के 78 वर्ष पश्चात भी तहसील मुंडावर जिला खेरथल-तिजारा स्थित बेहरोज गांव में ग्राम वासियों एवं जैन समाज को उनका आज तक नहीं मिला जमीनों का हक

जैन धर्मायतनों एवं पुरातत्व के संरक्षण की मुनि पावन सागर महाराज सहित जैन समाज ने की मांग

उदयभान जैन, जयपुर

जयपुर, 25 अगस्त। सभी धर्मों के साधु संतों का सम्मान करने का दम भरने वाली तथा राजस्थान में सनातनी सरकार होने के बावजूद भी संसार में सबसे ज्यादा त्याग तपस्या करने के लिए प्रसिद्ध एक दिगम्बर जैन संत को जैन धर्म, संस्कृति एवं पुरातत्व तथा जिनायतनों की रक्षा एवं ग्रामवासियों को उनका हक दिलाने, जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य करवाने के लिए की गई मांग पर अब तक कार्यवाही नहीं किये जाने के क्रम में सरकारी सिस्टम से व्यथित होकर आगामी 3 सितम्बर से आमरण अनशन करने जैसा कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। ऐसे दिगम्बर जैन संत मुनि पावन सागर महाराज जिनका वर्तमान में जयपुर के गायत्री नगर के महारानी फार्म स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में वर्षायोग चल रहा है।

यह कदम मुनि पावन सागर महाराज अकेले नहीं बल्कि उनके ही संघ में दूसरे मुनिराज सुभद्र सागर तथा बड़ी संख्या में जैन बंधुओं को भी उठाना पड़ रहा है।

श्री दिगम्बर जैन मंदिर महारानी फार्म प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष कैलाश चन्द छाबड़ा एवं मंत्री राजेश बोहरा ने

सोमवार को संवाददाताओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि भारत देश की स्वतंत्रता के 78 साल बाद भी बेहरोज के सभी धर्मों के ग्रामवासियों को उनकी जमीन का हक आज तक भी नहीं मिला है। वहीं दूसरी ओर बेहरोज में स्थित जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार कार्य करवाने की अनुमति भी प्रशासन ने आज तक भी नहीं दी है। उन्होंने प्रकरण की जानकारी देते हुए विस्तार से बताया कि अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की तलहटी में अवस्थित प्राकृतिक सौंदर्य से संपन्न चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ हजारों वर्षों से स्थित गांव बहरोज तहसील मुंडावर जिला खैरथल अलवर में स्थित है। गांव वालों एवं जैन समाज के लोगों को आज तक स्वतंत्रता के 78 वर्ष बाद भी उनको उनकी जमीन का हक नहीं मिल पाया है। गांव वालों ने कई बार प्रयास किया। प्रशासन से, मंत्रियों से संपर्क किया कि उनको उनका हक दिलाया जाए लेकिन प्रशासन के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी। मजबूर होकर दिगंबर जैन मुनि पावन सागर महाराज को आमरण अनशन करने की घोषणा करनी पड़ी। उल्लेखनीय है कि ग्राम बेहरोज में जैन आबादी होने, उनके मकान, जमीन, जैन धर्मायतन आदि वर्षों पूर्व से होने के प्रमाण ग्राम वासियों एवं जैन समाज द्वारा प्रशासन को उपलब्ध करवाए जा चुके हैं। श्री छाबड़ा बताते हैं कि किसी समय इस गांव में 900 घर की जैन समाज थी। मुगलों के समय एक ही दिन में पलायन करके सारे जैन वहां से चले गए। उनके वह स्थान और मंदिर आज भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़े हुए हैं। उनके मकान पहाड़ की तलहटी पर थे। उन मकानों पर मुगलों ने कब्जा कर लिया। सन 1947 में भारत आजाद हुआ, उस समय सभी मुसलमान भी बेहरोज छोड़कर पाकिस्तान चले गए लेकिन जैन समाज के लोगों की धरोहर आज भी वही की वही पड़ी हुई है। सारे मंदिरों व मकान के खंडहर भी वहां पड़े हुए हैं। जैन समाज ने उन मंदिरों का जीर्णोद्धार करने के लिए प्रशासन से अनुमति भी मांगी थी लेकिन प्रशासन ने मना कर दिया।

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या फूलकर,
हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी,
अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।

दिगम्बर जैन समाज के प्रमुख श्री दशलक्षण पर्व समारोह की सानन्द सम्पन्नता पर आत्म शुद्धि के महापर्व क्षमावाणी के अवसर पर विगत वर्ष में हमसे जाने-अनजाने में मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तः करण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखते हैं।

विश्व विख्यात मार्बल नगरी मदनगंज-किशनगढ़ के दानवीर धर्मात्मा

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

हीरालाल बाकलीवाल, किशनगढ़
श्रीमती शान्ति बाकलीवाल, किशनगढ़
जय कुमार बाकलीवाल, किशनगढ़
श्रीमती जया बाकलीवाल, किशनगढ़
गौरव बाकलीवाल, किशनगढ़

देवेन्द्र झांझरी, किशनगढ़
कमल विमला बैद, किशनगढ़
पद्मचन्द अजमेरा, किशनगढ़
अशोक कुमार पाटनी उत्कृष्ट मार्बल किशनगढ़
श्रीमती प्रेमलता पाटनी, किशनगढ़

निहाल चन्द पहाड़िया, किशनगढ़
पद्मचन्द गंगवाल, जयपुर
अविका जैन, किशनगढ़
लालचन्द पाटनी, किशगनढ़
श्रीमती रेखा बड़जात्या अध्यापिका, किशनगढ़

निर्मल कुमार सेठी, किशनगढ़
नेमीचन्द पाटनी, किशनगढ़
राहा छाबड़ा, किशनगढ़
श्रीमती ममता बोहरा, किशनगढ़
श्रीमती बीना सेठी, किशनगढ़

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच आफिस- जयपुर, इंदौर, सुरत, बाम्बे, कोलकाता, गुवाहाटी

संपूर्ण भारतवर्ष में विराजमान जैन संतों के पावन चरणों में नमन वंदन् अभिनंदन

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या फूलकर,
हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी,
अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

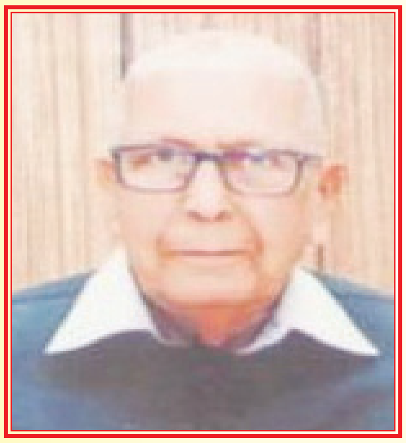

भागचन्द टोंग्या-स्व. श्रीमती पतासी देवी जैन

देवेन्द्र कुमार टोंग्या-श्रीमती उर्मिला देवी टोंग्या, अमन कुमार टोंग्या-श्रीमती किरण देवी टोंग्या चि. शोभित टोंग्या

1-फ-44, विज्ञान नगर, कोटा (राज.) 324005
मो. 9352631666, 9214078916

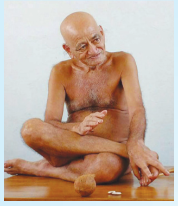

संपूर्ण भारतवर्ष में विराजमान जैन संतों के पावन चरणों में नमन वंदन् अभिनंदन

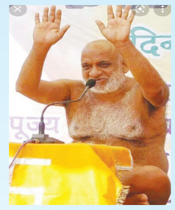

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या फूलकर,
हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी,
अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

देवाधिदेव श्री 1008
श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन त्रिकाल चौबीसी पुण्योदय अतिशय क्षेत्र, नसियां जी दादाबाड़ी, कोटा

अध्यक्ष	निदेशक	कोषाध्यक्ष
हुकम जैन 'काका' मो. 9414184618	जम्बू जैन सर्राफ मो. 9829038111	मनीष जैन मोहीवाल मो. 9414286020

समस्त कार्यकारिणी श्री नसियां जी क्षेत्रीय दिगम्बर जैन समाज, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
मो. 9413166664, 0744-4501317

आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो, कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।
आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो, कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

बी. एल. जैन श्रीमती निर्मला जैन
मो. 9314336626

TRADE CENTRE
288, Shopping Centre, Kota-324007 (Raj.)
Phone : 0744-2361159, 2362871
Fax : 2362652 Email- tradecen@datainfosys.net
Consignment Agent : Shell Ind. MKTS. P. Ltd.
Liasioning Agent : Vuith Turbo L & T. Ltd.

दिगम्बर जैन समाज के प्रमुख श्री दशलक्षण पर्व समारोह की सानन्द सम्पन्नता पर आत्मशुद्धि के महापर्व क्षमावाणी के अवसर पर विगत वर्ष में हमसे जाने-अनजाने में मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तःकरण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखते हैं।

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

श्री सकल दिगम्बर जैन समिति (रजि.)
कोटा-324006 (राज.)

पूर्व अध्यक्ष	परम संरक्षक	अध्यक्ष
राजमल पाटोदी अजय बाकलीवाल	विमलचंद जैन (नान्ता) विनोद कुमार जैन टोरडी प्रकाश जैन ठौरा	प्रकाश जैन बज मो. 9829038108
कोषाध्यक्ष जितेन्द्र जैन हरसोरा मो. 9414189438	**महामंत्री** पद्म जैन बड़ला मो. 9829036695	

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यगण

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर महाराज के समाधि दिवस पर पंचामृत अभिषेक शांतिधारा का आयोजन

शेखरचंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

किशनगढ़। बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महामुनिराज के 70 वें समाधी दिवस पर श्री शांतिसागर स्मारक में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ट्रस्ट के प्रचार प्रसार मंत्री चन्द्र प्रकाश बैद ने बताया कि बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज के समाधि दिवस पर प्रातः श्री जी के पंचामृत अभिषेक शांतिधारा की गयी तत्पश्चात आचार्य शांतिसागर महाराज के चरणों का जल, नारियल पानी, अनार रस, मौसमी रस, श्करा, घृत, दूध, दही, सर्वोषधि, केसर एवं पुष्प से पंचामृत अभिषेक किये गए एवं दुग्ध, केसर, दही, जल से शांति धारा की गयी तत्पश्चात् आचार्य श्री की पूजन की गयी एवं अंत में श्री जी एवं आचार्य श्री की महाआरती की गयी। ट्रस्ट के सचिव राजकुमार दोसी ने बताया कि आचार्य शांतिसागर महाराज के कारण ही आज हमें मुनियों के दर्शन वंदन करने का सौभाग्य मिल रहा है। आचार्य श्री के उपकारों को जैन समाज कभी भुला नहीं सकता है। समाधि दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुनिसुव्रतनाथ पंचायत के उपाध्यक्ष दिलीप कासलीवाल, कोषाध्यक्ष चेतन पांड्या, उपमंत्री राजेश पांड्या, प्रकाश गोधा, विमल पाटनी, महेन्द्र पाटनी, राजकुमार दोसी, हीरालाल बाकलीवाल, सुरेन्द्र दगड़ा, जयकुमार बैद, कमल अजमेरा, चन्द्र प्रकाश बैद, गौरव पाटनी, निर्मल झांझरी, अनिल कासलीवाल, सुशील काला, मनोज गोधा, कमल बैद, बाबू गदिया, जीतू पाटनी, मुकेश काला, अनिल पाटनी, पारस गंगवाल, जयकुमार दोसी, प्रवीण सोनी के साथ सुलोचना कासलीवाल, कुसुम दोसी, मधु अजमेरा सहित अनेक समाजबंधु उपस्थित थे।

अद्‌भुत प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी श्री भागचन्द्र जी टोंग्या

कोटा। देव शास्त्र गुरू के परम भक्त उदारमना व्यवहार कुशल, शांत व्यक्तिव के धनी श्रीमान भागचन्द्र जी टोंग्या लगभग 12 साल तक अतिशय तीर्थक्षेत्र पदम्पुरा के अध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं निस्वार्थ भाव से समर्पित कीं। आपने अपने अध्यक्ष काल में चार बार श्रीमती सोनिया गांधी जी को बुलाया। वर्तमान समय में आप अपने मकान 1 फ44 विज्ञान नगर कोटा आवास पर रह रहे हैं। आप वर्तमान समय में निवाई जैन समाज के अध्यक्ष अतिशय तीर्थक्षेत्र सारवना के शिरोमणि संरक्षक हैं। आपकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती पतासी देवी टोंग्या जो कि आस्थावान, धर्मनिष्ठ सद संस्कारों से युक्त थी। आपके सुयोग्य समाजसेवी सुपुत्र देवेन्द्र कुमार टोंग्या पुत्रवधु श्रीमती उर्मिला देवी टोंग्या सुपौत्र अमन कुमार टोंग्या पौत्रवधु श्रीमती किरण देवी टौंग्या प्रपौत्र चि. शोमित जैन टोंग्या हैं।

– पारस जैन 'पार्श्वमणि', संवाददाता, कोटा

श्री दिगम्बर जैन युवा मण्डल ब्यावर द्वारा गौवंश बचाओ अभियान का शुभारंभ

राकेश जैन, संवाददाता

19 अगस्त। श्री दिगम्बर जैन युवा मण्डल ब्यावर जो कि एक सामाजिक संगठन है और विभिन्न सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों में संलग्न है, के द्वारा सामाजिक कार्यक्रम के तहत जिला कलेक्टर श्री कमल राम जी मीणा के सानिध्य में जीव दया के अंतर्गत गोवंश बचाओ अभियान की शुरुआत की गई। मण्डल के मंत्री राकेश गोधा ने बताया कि गोवंश बचाओ अभियान के तहत ब्यावर एवं ब्यावर के बाहरी सीमा में जो गोवंश सड़क एवं राज्य मार्ग पर आकर बैठ जाते हैं उनकी दो पहिया एवं चार पहिया वाहनों की चपेट में आने से अकाल मृत्यु हो जाती है साथ ही वाहन चालक को भी जान माल की हानि होती है। इससे गौवंश की सुरक्षा हेतु रेडियम की बेल्ट उनके गले में पहनाई जाएगी। जिससे रात्रि में लाइट की रोशनी में रेडियम की चमक से गोवंश की उपस्थिति का पता चल सके और उनकी सुरक्षा हो सके।

"सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

निदेशक साधना मादावत

ग्लोबल युवा महासभा द्वारा भारत की सशक्त महिला शक्ति सम्मान लंदन बुक ऑफवर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा सम्मानित, मुम्बई जैन समाज द्वारा नारी रत्न सम्मान, मैं भारत हूं फाउंडेशन मुम्बई द्वारा राजस्थान कोहिनुर अवॉर्ड से सम्मानित आदि अनेकानेक उपाधियों से अलंकृत
मो. 9424090608, 8962830838

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में नमन् वंदन

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र प्यावड़ी पीपलू जिला टोंक (राज.)
अध्यक्ष रतनलाल जैन मो. 9571268503
महामंत्री श्रेयांस अग्रवाल मो. 8124967610
उपाध्यक्ष रमेश चद जैन (प्यावडी वाले) मो. 9351387444
एवं मंदिर समिति के सदस्यगण

विशेषता - दिसम्बर 2019 से इस मंदिर में लगभग प्रत्येक पूर्णिमा को केसर एवं चांदी का सिक्का दिखाई देता है। सैकड़ों श्रद्धालुगण दर्शन कर चुके हैं।
अपनी चंचला लक्ष्मी का दान देकर पुण्यार्जन करें।

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

"सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

स्व. श्री विमल चंद जैन

पारस जैन पार्श्वमणि

श्रीमती सारिका जैन

कुमारी खुशबू जैन

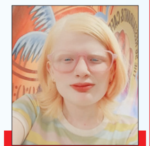
कुमारी गरिमा जैन

मकान नं. ए 145, आर. के. पुरम त्रिकाल चौबीसी जैन मंदिर के पास, कोटा (राज.)-324010 मो. 9414764980

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में नमन् वंदन

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, विज्ञान नगर, कोटा 324005 राज.

राजमल जैन पाटोदी अध्यक्ष मो. 9414176474	पारसमल जैन सी.ए. कार्याध्यक्ष मो. 9352621024	रितेश सेठी कार्याध्यक्ष मो. 9413353130
बाबूलाल जैन कोषाध्यक्ष मो. 9413470348	पी.के. हरसोरा मंत्री मो. 9413404140	अनिल जैन ठोरा महामंत्री मो. 9352609001

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन
क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

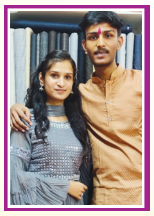

अजय जैन
श्रीमती अर्चना जैन
कुमारी प्रियल, सक्षम हरसौरा, भानपुरा
पता-अजय गारमेन्टस भानपुरा, जिला-मंदसौर (म.प्र.) 458775, मो. 9424076950

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन
क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्री महेन्द्र कुमार जी-अनिला जी, आशीष जी-प्रियंका जी, अखिल जी-मेघा जी, नवांश, मितांश, अतिक्षा, अविका एवं समस्त
लांबाबांस परिवार मंडाना वाले
निवासी म.नं. 1-बी-46, महावीर नगर विस्तार योजना, कोटा (राज.) 324010
मो. 9414181318

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन संतों के पावन चरणों में नमन् वंदन अभिनंदन। क्षमावाणी के पावन पर्व पर हृदय से क्षमा भाव।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

अनिल कुमार जैन
"बीएसएनएल"
ध.प. श्रीमती सीता जैन
मं.नं. 191/8 प्रताप नगर,
जयपुर (राज.) 300233
मो. 9414001041

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन संतों के पावन चरणों में नमन् वंदन अभिनंदन।
क्षमावाणी के पावन पर्व पर हृदय से क्षमा भाव।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

इंजी. श्री पी. सी. जैन

श्रीमती अभिलाषा जैन

(इंजी.) प्रियक जैन- (इंजी.) चीना जैन, चि. पराग जैन
निवास - 6 I 12
तीन बत्ती, मेन रोड,
बसन्त बिहार, कोटा
0744-2400400, 09462733133

श्री ताराचंद जैन जी को जन्मदिन के 80 वर्ष पूरे होने पर हार्दिक शुभकामनाऐं

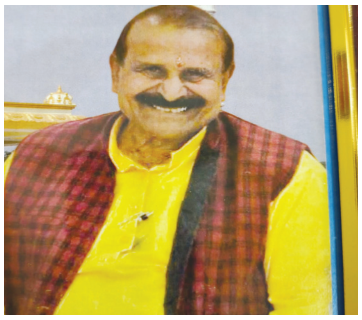

श्री ताराचंद जैन जी का जन्म वैधनाथधाम देवघर में आज से 80 वर्ष पूर्व हुआ था। इनके सामाजिक कार्यों को ध्यान में रखते हुए एवं उच्च न्यायलय ने उन्हें बाबा वैद्यनाथ मंदिर प्रबंधन बोर्ड का ट्रस्टी बनाया साथ ही वर्ष 2003 से वे झारखंड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष हैं, जिसे मंत्री का दर्जा प्राप्त है। वे झारखंड प्रादेशिक गौशाला महासंघ के उपाध्यक्ष तथा देवघर गौशाला के भी उपाध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने चतरा जिले के इटखोरी को भगवान शीतलनाथ की जन्मभूमि के रूप में स्थापित कराने में मार्गदर्शक भूमिका निभाई। आपके द्वारा अनेक प्रशंसनीय कार्य किये गये। ऐसे महान व्यक्ति के जन्म दिवस पर जैन गजट परिवार उनको हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-साथ भगवान महावीर जी से उनकी दीर्घायु एवं स्वस्थ होने की प्रार्थना करता है।

आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Sunil Jain
Kalwada Mahendr
World City Sej
Sanganer
Jaipur (Raj.)
302029
Mob- 9983675581

मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तःकरण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखता हूँ।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

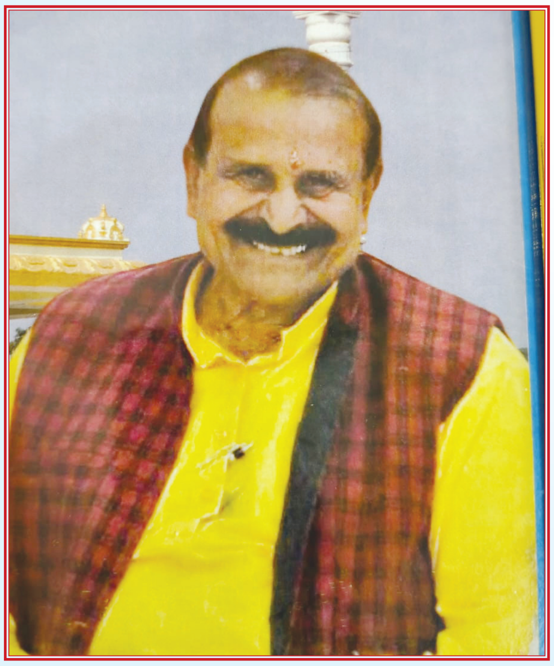

ताराचंद जैन
अध्यक्ष
झारखण्ड राज्य
दिगम्बर जैन
धार्मिक न्यास बोर्ड
ई–2/8 साकेत नगर,
हिनू, रांची
(झारखण्ड) 834002
मो. 9931482805

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या फूलकर, हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी, अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।

: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :

प्रकाशचन्द बड़जात्या (महामंत्री-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा) - संतोष देवी (पत्नी)
पुत्र-पुत्रवधुः शैलेन्द्र - सुनीता, नीरज-निकिता, पुत्रीः अनीता, पौत्री पौत्रः श्रेया, नीव एवं श्लोक जैन

एवं समस्त बड़जात्या परिवार, चेन्नई

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

ज्ञानचंद जी-विजया जी जैन
संयज-तृप्ति जी जैन
आकांक्षा जी, अदिति जी,
आराध्या जैन
24-ए, आर. के. पुरम,
कोटा (राज.) 321040
मो. 9413650012

क्षमा में बहुत बड़ी शक्ति होती है

निर्मल-पुष्पा बिंदायका, कोलकाता

पर्युषण पर्व एक ऐसा पर्व है जिसमें एक दूसरे को क्षमा करने से शांति प्राप्त होती है, क्षमा से ही सबके दिलों को जीता जा सकता है। क्षमापना दिवस एक दूसरे को निकट लाने का पर्व है। यह एक दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है, यह पर्व समूचे देशवासियों को सुख शांति का संदेश देता है, क्षमा में हमें हमारे पापों से दूर करके मोक्ष मार्ग दिखाती है। क्षमा वाणी हमें झुकने की प्रेरणा देती है। मनुष्य को किसी की गलतियां या अपराध का प्रतिकार नहीं करना चाहिए। क्षमा का अर्थ सहनशीलता भी है। क्षमा कर देना बहुत बड़ी क्षमता का परिचायक है, इसलिए नीति में कहा गया है कि 'क्षमा वीरस्य भूषण' अर्थात क्षमा वीरों का आभूषण है। अतः हर व्यक्ति को मिलनसार रहकर शांतिमय जीवन व्यतीत करना चाहिए।

-प्रेषक राजाबाबू गोधा, संवाददाता

क्षमा वीरों का आभूषण है

अनिल कुमार बनेठा सांगानेर, जयपुर

पर्युषण पर्व हमको धर्म के मार्ग पर ले जाकर मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर करता है। प्रतिवर्ष पर्यूषण पर्व आकर हमारे अंतःकरण में दया, क्षमा और मानवता जागने का कार्य करता है। क्षमावाणी हमें झुकने की प्रेरणा देती है, क्षमा हमें अहंकार से दूर करके झुकने की कला सिखाती है। क्षमा मांगने से अहंकार खत्म होता है, जबकि क्षमा करने से संस्कार बनते हैं। जिसके पास क्षमा भाव है वह हमेशा प्रसन्न चित्त रहते है और उनके कोई भी शत्रु नहीं होते हैं। अतः क्षमा पर्व पर क्षमा को अपने जीवन में उतारना ही सच्ची मानवता है।

मनुष्य के जीवन में क्षमा का बहुत बड़ा महत्व है

अर्चना जैन (रानी) दुगेरिया सर्राफ, कोटा

क्षमावाणी पर्व हमको मैत्री दिवस के रूप में मनानी चाहिए। यह एक ऐसी अद्भुत चीज है जो मांगी जाए या दी जाए, मनुष्य को महान और देव तुल्य बनाती है। भूल होना प्रकृति का स्वभाव है, मान लेना संस्कृति है और सुधार लेना प्रगति है। क्षमा मांगने से अहंकार ध्वंस होता है और शांति का अनुभव होता है। क्षमा नफरत का निदान है, क्षमा नैतिकता का निर्वाह है। हमारी आत्मा का मूल गुण क्षमा है, जिसके जीवन में क्षमा आ जाती है उसका जीवन सार्थक हो जाता है। जिस तरह क्षमा मांगना व्यक्तित्व का अच्छा गुण है, उसी तरह क्षमा कर देना भी इंसान के व्यक्तित्व में चार चांद लगाने का काम करता है। अतः जीवन में क्षमाशीलता का बहुत बड़ा महत्व है।

क्षमावाणी आत्म शुद्धि का पर्व है

उत्तम कुमार पांड्या (खोरा बिसल वाले)

भारतीय संस्कृति एक गौरवशाली संस्कृति है। मनुष्य के जीवन में क्षमा की बड़ी आवश्यकता है, सभी आपस में क्षमा भाव धारण करना सीख लें तो विश्व में सुख शांति का वातावरण तैयार हो सकेगा। क्षमावाणी हमारी वैमनस्यता, कलुषता, बैर, दुश्मनी आपस में तमाम प्रकार की टकराहटों को समाप्त कर जीवन में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, प्यार, आत्मीयता की धारा को बहाने का नाम है। हम अपनी कषायों को छोड़ें, अपने बैर भाव की गांठों को खोलें, बुराईयों को समाप्त करें, बदले की भावना को छोड़कर आपस में मानव व्यवहार का अहम हिस्सा बनकर क्षमा भाव रखें। क्षमा सर्वत्र सभी के लिए हितकारी होती है, क्षमा मांगना और क्षमा करना दोनों महान गुण हैं, जो मनुष्य को हल्का कर सुखी बनाते हैं।

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये
आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्री कपूरचंद जैन
डॉ. सुमित्रा जैन
101 मंगलदीप अपार्टमेंट,
05 श्याम नगर, राज हॉस्पिटल
के पास जोधपुर
(राज.) 342008
मो. 9828312654

क्षमा से बड़ा कोई धर्म नहीं है

चित्रा गोधा (धर्मपत्नी राजाबाबू गोधा, संवाददाता)

मानव जीवन की सबसे पवित्र भावना है क्षमा। क्षमा केवल एक शब्द नहीं, बल्कि वह जीवन-दर्शन है जो व्यक्ति को आत्मिक शांति और समाज को स्थायी सौहार्द प्रदान करता है। जैन धर्म में क्षमा वाणी पर्व इस भाव का महापर्व है। यह पर्व वर्ष भर की कटुता, द्वेष और गलतियों को समाप्त कर जीवन में नई शुरुआत करने का अवसर देता है। क्षमा हमारे अंतःकरण में दया और मानवता की ज्योति आलोकित कर सज्जनता और सौम्यता के रास्ते पर ले जाकर मनमुटाव, दुश्मनी एवं आपसी टकराहटों, प्रतिशोध की भावना, घृणा-द्वेष को मिटते हुए जीवन में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, प्यार, आत्मीयता की धारा प्रवाहित कर देती है।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

महावीर प्रसाद जैन-राजकुमारी अजमेरा
विकास-ऋतु अजमेरा, वरूण-वर्षा अजमेरा वत्सल, सजल, आर्जव, अनय एवं समस्त अजमेरा परिवार कोटा (राज.) 324005 मो. 9352638979, 8209092377
आप अतिशय तीर्थ चांदखेड़ी कमेटी में महामंत्री पद पर विगत 18 वर्षों से सेवाएं दे चुके है। वर्तमान समय में आप कार्यकारी महामंत्री के पद पर हैं। आप महासमिति के कोटा संभाग के पूर्व अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

महावीर प्रसाद-श्रीमती सुलोचना जैन
मनोज कुमार-श्रीमती अंजली जैन
दीपक-श्रीमती विनीता जैन
अमिशी, अद्विका, शिवांश जैन
63 जगदंबा नगर, हल्दी घाटी
मार्ग प्रताप नगर, जयपुर (राज.) 302033
मो. 8875452555, 9549789555

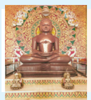

श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान सुथड़ा

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

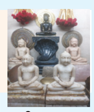

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान पराना

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

महावीर प्रसाद जैन-श्रीमती मैना देवी जैन
अध्यक्ष-सुखोदय तीर्थ सुंथड़ा जिला टोंक
मंत्री- जैन समाज निवाई
उपाध्यक्ष- जिला कांग्रेस कमेटी निवाई
पार्षद- नगरपालिका निवाई
विक्रम, प्रियंका ग्रंथ वीर जैन पराना वाले निवाई
जिला टोंक (राज.) मो. 9414204216

धर्म जागृति संस्थान राजस्थान प्रान्त को लगातार तीसरे वर्ष पूरे देश में प्रथम मिला पुरस्कार

पदम जैन बिलाला को पुनः प्रांतीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

25 अगस्त। अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान का नवम राष्ट्रीय रजत अधिवेशन जैन तीर्थ स्थान अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ (यू. पी.) में रविवार को अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनंदी महामुनिराज ससंघ (22 पिच्छी) के पावन सानिध्य में हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न हुआ। अधिवेशन में जैन समाज की घटती जनसंख्या, भगवान आदिनाथ के जन्मोत्सव पर अवकाश, जैन हो तो नाम में जैन लिखे, युवाओं को संस्कारित करें, जरूरत मंद को शिक्षा चिकित्सा आदि में सहायता, नारी शक्ति व युवा शक्ति को सशक्त करें आदि विषयों पर आचार्य श्री के सानिध्य में गंभीर चिंतन हुआ, संस्थान के संयुक्त महामंत्री संजय जैन बड़जात्या कामा एवं कोषाध्यक्ष पंकज जैन लुहाड़िया थड़ी मार्केट के अनुसार आचार्य श्री द्वारा जैसे ही राजस्थान प्रांत का नाम लगातार तीसरे वर्ष पूरे भारतवर्ष में प्रथम पुरस्कार के लिए घोषित किया पूरा सदन तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो उठा। केन्द्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष योगेश जैन मेरठ, महामंत्री भूपेंद्र जैन दिल्ली, अधिवेशन संयोजक निकुंज जैन दिल्ली, आर सी गर्ग आई पी एस बोलखेड़ा, राजकमल सरावगी ग्रीन नगर आदि द्वारा राजस्थान के प्रतिनिधियों के साथ मंच पर सभी का सम्मान किया गया। इधर आचार्य श्री ने राजस्थान के प्रांतीय अध्यक्ष व उनकी पूरी टीम के कार्यों की सराहना करते हुए श्री बिलाला को पुनः अगले कार्यकाल के लिए प्रान्तीय अध्यक्ष घोषित किया, कार्यक्रम में प्रान्तीय अध्यक्ष व कोषाध्यक्ष ने आचार्य श्री को वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया, द्वितीय पुरस्कार दिल्ली की उत्तम नगर पश्चिमी दिल्ली को तथा तृतीय पुरस्कार शाहदरा जोन शाखा दिल्ली को प्राप्त हुआ। संस्थान के राजस्थान प्रान्त के संरक्षक ओम प्रकाश काला मामाजी, ज्ञान चंद जैन बस्सी, राकेश जैन माधोराजपुरा के अलावा कार्यकर्ता निर्मल पाटोदी, देवेन्द्र कासलीवाल, सिद्ध सेठी, नरेन जैन, राजेन्द्र ठोलिया, सोभाग अजमेरा, किरण शिखर चंद जैन, पंकज काला, विनीत जैन, महेश काला, प्रमेश जैन सहित राजस्थान की 34 शाखाओं के श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को प्रशस्ति देकर सम्मानित किया गया। आचार्य श्री ने संस्थान को अपने उद्देश्य के अनुरूप धर्म प्रभावना व जैन समाज हित के कार्य करते रहने हेतु आशीर्वाद दिया। अधिवेशन में युवा व महिला प्रकोष्ठ का भी राष्ट्रीय स्तर पर गठन किया गया जिसमें राजस्थान के बहुत से प्रतिनिधियों को स्थान मिला है। आयोजन का कुशल संचालन मनोज जैन शास्त्री व संजय जैन बड़जात्या कामा द्वारा किया गया।

फागी कस्बे में श्रृद्धालु जन भक्ति भाव से धर्म का पुण्यार्जन कर रहे हैं अर्जित

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

फागी कस्बे में विराजमान आर्यिका सुरम्यमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्यार चंद, त्रिलोकचंद, शिखर चंद जैन पीपलू वाले परिवारजनों की तरफ से सामूहिक रूप से शांतिधारा कर सुख और समृद्धि की कामना की गई, कार्यक्रम में अभिषेक, सामूहिक रूप से शांतिधारा, अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना करने के बाद भक्तिजनों ने मंगलमय वाणी का रसपान करने हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। आर्यिका सुरम्यमति माताजी ने अपने मंगलमय आशीर्वचन में जिनवाणी के महत्व बारे में बताया। कार्यक्रम में चातुर्मास समिति के महामंत्री संतोष बजाज ने बताया कि कार्यक्रम बाद आर्यिका श्री ने सभी श्रृद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी संयमपूर्वक इस पुण्य के योग्य बनकर अपना कल्याण कर सकते हैं, आर्यिका श्री ने कार्यक्रम में शामिल सभी साधर्मी बन्धुओं को मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया।

जैन युवा सेमिनार में जीवन जीने की कला बताई

महावीर सरावगी, संवाददाता नैनवां

24 अगस्त, 2025। शांति वीर धर्म स्थल पर प्रथम दिन 100 से ज्यादा युवाओं ने सेमिनार में भाग लिया। दोपहर को 12:30 पर सेमिनार में मंगलाचरण की प्रस्तुति पलक जैन द्वारा व मंच का संचालन श्रीमती सुधा जैन चौधरी विदिशा ने किया। बाल ब्रह्मचारी पीयूष भैया ने सेमिनार में बताया कि अपने जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए बिना लक्ष्य के किसी भी मंजिल पर नहीं पहुंचा जा सकता। प्रज्ञानसागर महाराज ने बताया कि सेमिनार के प्रथम रोज अपनी बुराइयों को बाहर निकालो, अच्छाइयों को ग्रहण करो। प्रसिद्ध सागर महाराज ने बताया कि हमें जो भी आज वस्तु मिली और पुण्य से मिला लक्ष्य पर पहुंचने के लिए समय का पालन करना बहुत जरूरी है। अपना जीवन जीने के लिए समय का एक टाइम टेबल बनाओ। मुनिश्री ने बताया कि प्रेम माता-पिता भाई-बहन से करना चाहिए। ऐसे प्रेम प्यार से अपनापन झलकता है। अजनबी से प्रेम प्रसंग करना ही जीवन का पतन का कारण है। ज्यादा से ज्यादा समय अपनी पढ़ाई पर ध्यान दें, संस्कारों पर ध्यान दें, गुरुओं की बातों पर ध्यान दें, माता-पिता की बातों पर ध्यान दें।

श्री सन्मति सुंदर पावन वर्षायोग के पोस्टर का हुआ विमोचन

संवाददाता

फागी कस्बे में विराजमान आर्यिका सुरम्यमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में पावन चातुर्मास 2025 में अनेक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। प्रातः पार्श्वनाथ चैत्यालय में अभिषेक, शांतिधारा एवं विभिन्न पूर्वाचार्यों के अर्घ्य अर्पित करने के बाद पार्श्वनाथ चैत्यालय में भरी धर्म सभा में चातुर्मास वाचना के अंतर्गत आज आर्यिका श्री सुरम्यमति माताजी ने पाप कर्मों के बारे में प्रकाश डालते हुए बताया कि हमें पापों से बचना चाहिए। कार्यक्रम में आर्यिका श्री के मंगल प्रवचन के पश्चात् श्री सन्मति सुंदर पावन वर्षा योग 2025 के पोस्टर का भव्य विमोचन हुआ, कार्यक्रम में पावन वर्षायोग समय में आर्यिका श्री सुरम्यमति माताजी, क्षुल्लिका श्री सुज्ञातामति माताजी, क्षुल्लिका श्री सुतथ्यमती माताजी, ब्रह्मचारिणी किरण दीदी एवं बाल ब्रह्मचारिणी किरण दीदी धर्म की प्रभावना बढ़ा रहे हैं।

आज भी धर्म और समाज के प्रति समर्पित हैं कैलाशचंद पाटनी

रविन्द्र काला, संवाददाता, बूंदी

बूंदी। समाजसेवा के प्रति वही व्यक्ति समर्पित होता है, जिसका दिल और दिमाग जुड़ जाए। श्री कैलाशचंद पाटनी के अंतरमन में सदा से ही समाजसेवा के लिए बहुत कुछ अच्छा सहयोग करने का भाव रहा है। वह यह अच्छे से जानते हैं कि सेवा से बढ़कर कोई सुख नहीं होता, प्रेम से बढ़कर कोई प्रार्थना नहीं होती और सहानुभूति से बढ़कर कोई सौन्दर्य नहीं होता।

इस प्रकार की प्रतिभा के धनी कैलाशचंद पाटनी का जन्म स्व. श्री गोपीलाल जी पाटनी के घर पर 23 अगस्त 1940 को बूंदी में हुआ। इन्होंने बीए तक की शिक्षा ग्रहण करके राजकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहते हुए सांख्यिकी अधिकारी के रूप में मार्च 1999 को सेवानिवृत्त हुए। श्री कैलाशचंद जी पाटनी का खण्डेलवाल सरावगी समाज बूंदी शहर के साथ साथ पूरे बूंदी जिले में सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में बहुत बड़ा योगदान रहा। वह सन् 1980 से नियमित रूप से साधु संतों में लगे रहे। जब 1998 में खण्डेलवाल सरावगी समाज की एडवोकेट गोपाल लाल जी झालानी की अध्यक्षता में संस्था बनी तब से समाज की संस्था में किसी न किसी पद पर सेवा देते रहे। राजकीय सेवा में रहते हुए समाज के लिए कोषाध्यक्ष के पद पर रहे। 2003 से 2006 तक मंत्री के पद पर रहे। 2009 से 2011 तक अध्यक्ष के पद को सुशोभित किया। वह 2 नवम्बर 2003 को भारतवर्षीय खण्डेलवाल दिगम्बर जैन महासभा के सक्रिय सदस्य बने जो आज तक नियमित रूप से चल रहे हैं। कैलाशचंद जी पाटनी 2001 से 2005 तक भाजपा के पेंशन प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष भी रहे।

उन्होंने कठिन परिश्रम से 2003 में बूंदी जिले की पारिवारिक स्मारिका को बनाने में बहुत बड़ा योगदान किया। उनके प्रयासों से ही इस पारिवारिक स्मारिका का विमोचन अखिल भारतीय खण्डेलवाल दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष निर्मल जी सेठी व मंत्री बाबूलाल जी छाबड़ा को बूंदी बुलाकर स्मारिका का विमोचन कराया। उन्होंने जैन गजट को बताया कि मेरे इस उम्र में भी स्वस्थ रहने का कारण नियमित योग करना है। श्री कैलाशचंद जी पाटनी अपनी पूरी यौवन अवस्था में सन् 1976 से ही चौगान जैन आश्रम में स्थित आदिनाथ भगवान के अभिषेक, पूजन नियमित करते आ रहे हैं। आज 85 वर्ष की उम्र में भी वह भगवान के नियमित कलशाभिषेक, पूजन करते हैं। उनके संयोजन में मुनि श्री कुशाग्रनंद जी महाराज का 2004 में चातुर्मास कराने तथा 2011-12 में सृष्टिभूषण माताजी का चातुर्मास हुआ। इस प्रकार से मुनि की सेवा में भी अग्रणी रहे।

इस उम्र में भी खण्डेलवाल जिला सरावगी समाज के वरिष्ठजनों का सम्मान समारोह के संयोजक बनाए गए और पूरी निष्ठा, लगन, तत्परता से इस कार्य को सफल बनाने में लगे हुए हैं। वह जैन गजट के वर्षों से नियमित पाठक हैं और अभी आजीवन सदस्यता को पुनः रिन्यूवल करवाया है। ऐसे कर्मठ, गतिशील व्यक्ति के धनी कैलाशचंदजी पाटनी समाज को गति देने के लिए 85 वर्ष की उम्र में भी सक्रिय रूप से उनकी भागीदारी बनी हुई है।

झंडारोहण कर किया शहीदों को नमन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

कोटा शहर में मुनिपुंगव सुधा सागर बालिका छात्रावास दादाबाड़ी कोटा के तत्वाधान में स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को झंडारोहण कर शहीदों को नमन कर विशिष्ट अतिथियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में छात्रावास की अधीक्षिका अर्चना (रानी) दुगेरिया ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आर. पी. एस अधिकारी श्रीमान अंकित जी जैन एवं विशिष्ट अतिथि प्रज्ञा मेहता के सानिध्य में किया गया, कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं कई क्रांतिकारी शहीदों के ऊपर भाव नाटक का मंचन किया गया एवं पूर्व में छात्रावास के द्वारा छात्रावास से निकले हुए प्रतिभाशाली बच्चे जो मजिस्ट्रेट एम. बी. बी. एस डॉक्टर एवं आईटीयन इंजीनियर, सहित विभिन्न पदों पर अधिकारी बन चुके उनको बुलाया गया एवं उनका छात्रावास की तरफ से भाव भीना सम्मान किया गया और सम्मान में उनको सिल्वर कॉइन एवं आचार्य श्री का मोमेंटो देकर आदिनाथ भगवान की तस्वीर के द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में मोटिवेशनल स्पीकर प्रज्ञा मेहता थे एवं अर्चना रानी (दुगेरिया) सर्राफने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तः करण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखता हूँ।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Indresh Kumar Jain
Director

ABHINAV TRADEX PVT. LTD.
Mfg. of Thermal Paper & Carbonless Paper
Indentors, Importers & Convertors of All Grades of Paper & Board

OFFICE :
5/2389/103, New Mela Ram Market
Chatta Shahji, Chawri Bazar, Delhi-06
M: 7065363080

FACTORY :
23/20, Ambay Garden, Main G.T.
Kamal Road, Libaspur, Delhi-110042

EMAIL : abhinavtradex2001@gmail.com, acctsatpl@gmail.com
WEBSITE : www.abhinavtradex.com

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

हंसमुख जैन गांधी
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
राष्ट्रीय मंत्री- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
202, समवशरण अपार्टमेन्ट
16/1, साउथ तुकोगंज
इंदौर (म.प्र.) 452001
मो. 9302103513

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

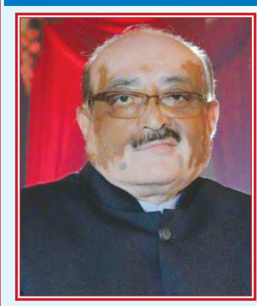

अनिल लुहाड़िया राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
अध्यक्ष - मुरादाबाद दिगम्बर जैन समाज
जेड-28, मानसरोवर कॉलोनी
मुरादाबाद (उ. प्र.) 244001
मो. 9837030030

सौभाग्यशाली क्षण

दिनांक 24 अगस्त 2025। एक मकान में अवशेषों में खुदाई में 21 जैन प्रतिमाओं का मिलना पूरे जैन समाज के लिए अत्यंत सौभाग्य शाली क्षण है। मुझे आज दर्शन कर असीम आनंद की अनुभूति हुई। 24 तीर्थंकर भगवान की जय जय जय। श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर कासन के महामंत्री श्री नरेश जैन जी ने बताया कि विगत लगभग 2.5/3 महीने से उन्हें स्वप्न में प्रेरणा मिल रही थी, प. पू. आचार्य श्री श्रुत सागर जी महाराज से समाधान हेतु आशीर्वाद प्राप्त किया और प्राचीन मंदिर के अवशेष स्थान की खुदाई में श्री जी की प्रतिमाएं प्राप्त हुई। - संदीप जैन (पूर्व प्रधान श्री दिगंबर जैन समाज गुरुग्राम), परम संरक्षक-श्री सिद्धांत तीर्थक्षेत्र, शिकोहपुर

मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तःकरण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखता हूँ।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

संजीव जैन
मैसर्स - जैन प्लास्टिक
369-ए, मोतीनगर,
ऐशबाग लखनऊ
(उ.प्र.) 226004
मो. 9415017824

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

हेमचंद जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं संयोजक
(श्री गोपाल दिग. जैन सिद्धान्त संस्कृत महाविद्यालय मुरैना)
रिषभ विहार, दिल्ली
मो. 9810015678

धार्मिक/सामाजिक आयोजनों में जैन गज़ट को दानराशि भेजना न भूले

जैन गज़ट शिकायत 9415008344
जैन गज़ट

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. मेरी और मेरे बेटे की कुंडली में चन्द्रग्रहण दोष है, क्या चन्द्र ग्रहण दोष की शान्ति एक साथ हो सकती है या अलग-अलग करानी चाहिये? मेरी शंका का समाधान करें - फिरोजी देवी, सीकर (राज.)

उत्तर - फिरोजी देवी जी, मां और बेटे की कुंडली के दोषों की शान्ति एक साथ करायी जा सकती है, इसमें शंका करने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 2. मेरी बेटी की दोनों आंख का नम्बर बढ़ गया है। डाक्टर भी हैरान है। हमें जैन आगम के अनुसार क्या करना है - हैप्पी, दिल्ली

उत्तर - जैन आगम के भक्तामर जी के अनुसार 5 नम्बर काव्य दृष्टि दोष को दूर करने में सहयोगी होता है अतः आप श्री भक्तामर स्तोत्र का 5 नं. काव्य बिटिया को 15 बार सुनायें, लाभ होगा।

प्रश्न 3. गुरूजी, शाम के समय मुझे बहुत डर लगता है, क्या कारण है? और मैं क्या करूं? - अंजली, मेरठ

उत्तर - आपकी कुंडली में चल रही कमजोर चन्द्रमा की दशा के कारण ऐसा हो रहा है। आप रोजाना शाम के समय श्री चन्द्रप्रभु चालीसा पढ़ें।

प्रश्न 4. मेरी कुंडली में पढ़ाई का योग कैसा है? और मुझे पढ़ाई करनी चाहिये या नही? - नुकुल, दिल्ली

उत्तर - नुकुल बेटे, आपकी कुंडली में पढ़ाई का बहुत अच्छा योग है और आपको केवल पढ़ाई ही करनी चाहिये। पढ़ाई में मन लगे इसके लिये श्री भक्तामर जी का 6 नं. काव्य 6 बार रोजाना पढ़ें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 826755078

आज का राशिफल

आदिनाथ टीवी

प्रतिदिन, प्रातः 05:35 बजे
पुनः प्रसारण प्रातः 10:15 बजे

जैन ज्योतिषाचार्य
रवि जैन गुरुजी
संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद् (पंजी.)

सम्पर्क सूत्र
9990402062, 8826755078
पता- 1/6991, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली-32

TATA PLAY #1086 | #1217 | airtel #700 | #628 | #694 | #478 | #882 | #514 | Jio TV #1086
अन्य सभी केबल्स पर भी उपलब्ध

**"सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"**

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

**रमेश कुमार-गुणमाला
अभिषेक-रिषिका आशीष-
स्वाति, अर्हम, सर्वज्ञ,
अनिश्का काला हैदराबाद**

Jawarilal Ramesh Kumar Kala, Hydrabad

'क्षमा वीरस्य भूषणं'
क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये
आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

प्रकाश बोहरा
ट्रस्टी- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबुल ट्रस्ट
डी-209, सेकेण्ड फ्लोर साकेत, दिल्ली - 110017 मो. 9810298267

**क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये
आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित**

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

महावीर प्रसाद अजमेरा
जैन गजट संवाददाता- जोधपुर
अंतिमा एजेन्सी
देवेन्द्र कुमार- श्रीमती सुगन्धा
चन्द्रप्रकाश- श्रीमती चंचल अजमेरा
सिद्धान्त अजमेरा, सुश्री अंतिमा अजमेरा
सुश्री मनीसी अजमेरा, सुश्री चक्षु अजमेरा
जोधपुर (राज.) मो. 9314268528

'क्षमा वीरस्य भूषणं'
क्षमावाणी पर्व पर विगत में हुई भूलों के लिये
आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

महावीर ठोले
महामंत्री- श्री भा. दिग. जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा महाराष्ट्र प्रांत, औरंगाबाद (महा.)
मो. 7588044495

पर से बड़प्पन मानना अर्थात स्वयं को दीन मानना है।

मान गलाने की चीज है बढ़ाने की नहीं

DOLPHIN WATERPROOFING

आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।

छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction

DR. FIXIT WATERPROOFING EXPERT

RAJENDRA JAIN
Dr. Fixit Authorised
Project Applicator
Mo. 80036-14691
116/194, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर
मो. 09425412374
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

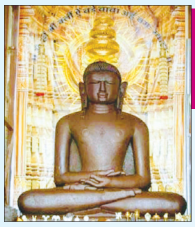

श्री श्री 1008
आदिनाथ भगवान

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

क्षमावाणी के परम पुनीत पावन स्वर्णिम शुभ अवसर पर भारतवर्ष के समस्त श्रद्धालुओं से हृदय के गहन स्थल से हार्दिक क्षमा याचना व सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन शत् शत् अभिनंदन

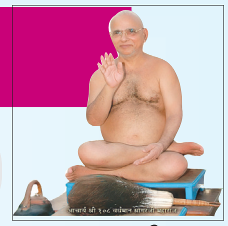

आचार्य
वर्धमान सागर जी
महाराज

-: क्षमा प्रार्थी/शुभाकांक्षी :-

निर्मल-पुष्पा, जेसिका बिन्दायका

(एवरग्रीन होजीयारी)

बगरू (जयपुर) निवासी, कोलकाता प्रवासी

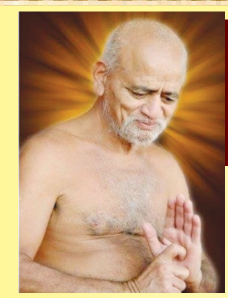

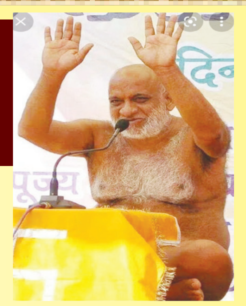

महान पर्वराज दशलक्षण पर्व आप सभी के लिये मंगलमयी होवे, हार्दिक शुभकामनायें

क्षमा प्रार्थी/शुभाकांक्षी

लोकेश जैन-श्रीमती निधि जैन, तपेश जैन-श्रीमती प्रीति जैन (पुत्रवधु), रिद्धी जैन, चिरायु, देवेश व रजत (पौत्र-पौत्री)
एवं समस्त पांड्या परिवार, खोरा वाले, जयपुर

मुनिभक्त उत्तम कुमार जी एवं श्रीमती सरोज देवी पांड्या खोरा वाले

1. संस्थापक अध्यक्ष एवं शिरोमणी परम संरक्षक-श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सेक्टर-10, मालवीय नगर, जयपुर, 2. गौरवाध्यक्ष एवं शिरोमणी संरक्षक-श्री दिगम्बर जैन आतिशय क्षेत्र, रैवासा-सीकर (राज), 3. अध्यक्ष एवं शिरोमणि संरक्षक-दिगम्बर जैन महासमिति, राजस्थान अंचल, 4. संरक्षक-श्रीजीतो इन्टरनेशनल ट्रेडिंग ऑरगेनाइजेशन, भारत, 5. पूर्व अध्यक्ष एवं शिरोमणि संरक्षक-दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चन्द्रगिरी, बैनाड़, जयपुर, 6. उपाध्यक्ष एवं ट्रस्टी-श्री दिगम्बर जैन होम्योपैथी ओषधालय, सेक्टर-3 व 10, मालवीय नगर, जयपुर, 7. परम संरक्षक-श्री दिगम्बर जैन संस्कृत कॉलेज, सांगानेर, जयपुर, 8. संरक्षक-श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, नारेली, अजमेर (राज.), 9. संरक्षक एवं उपाध्यक्ष-श्रमण संस्कृति संस्थान छात्रावास, सांगानेर, जयपुर, 10. संरक्षक एवं तीर्थ रक्षक-श्री भव्योदय अतिक्षय क्षेत्र आवाँ-टोंक (राज.), 11. संरक्षक-महिला मंडल एवं वृद्ध आश्रम, जौहरी बाजार, जयपुर, 12. पूर्व अध्यक्ष एवं संरक्षक -श्री शंकर सेवाधाम-अनाथ आश्रम, कानोता, जयपुर (राज.) 13. लाईफ मेम्बर-श्री महावीर इन्टरनेशनल, भारत, 14. लाईफमेम्बर-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी रजि. भारत, 15. लाईफ मेम्बर-इन्टनेशनल जैन एण्ड वैश्य ऑरगोनाइजेशन, रजि. भारत

➲ न्यू मेडिसन चेम्बर, जयपुर ➲ न्यू मेडिसन हाउस, जयपुर ➲ न्यू मेडिकल स्टोर, सीकर ➲ एल्केम लैब्रोरेट्री, बॉम्बे (C.F)
➲ MACPHAR REMEDIES LLP, बॉम्बे जयपुर ➲ सुधा सागर एंटरप्राइजेज, जयपुर मो. 9828880111

क्षमा वीरस्य भूषणं

मान्यवर,
जय जिनेन्द्र

आज के व्यस्त जीवन में अज्ञान या प्रमादवश, जाने या अनजाने में आचार, विचार, वाणी या लिखित रूप से व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं अन्य जिम्मेदारियों में उलझे मनुष्य से भूल हो जाना स्वाभाविक है।

अतः इस क्षमावाणी के महापर्व पर विगत में हुई समस्त भूलों के लिए आपसे करबद्ध क्षमा-याचना करते हैं और भविष्य में आपसे और प्रगाढ़ मैत्रीपूर्ण सम्बंध स्थापित हो, ऐसी जिनेन्द्र भगवान से कामना करते हैं।

क्षमाभिलाषी

सेठी परिवार

सिलचर | नई दिल्ली | तिनसुकिया

क्षमावाणी महापर्व
आश्विन कृष्ण एकम

08 सितम्बर 2025
सोमवार

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।